Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

## शिव पूजन रहस्यम्

# शिवार्चन पद्धति

लेखक
पं. शिवस्वरूप 'याज्ञिक'
भाष्कर प्रयाग (भटवाड़ी) उत्तरकाशी

मूल्य : 40

प्रकाशक:
बी.एस. प्रमिन्दर
दिल्ली-51

मुख्य वितरक:
कर्मसिंह अमरसिंह
पुस्तक विक्रेता, हरिद्वार
फोन-01334-225619

प्रकाशक :
**बी.एस. प्रमिन्दर प्रकाशन**
दिल्ली-51

मुख्य वितरक :
**कर्मसिंह अमरसिंह पुस्तक विक्रेता**
बड़ा बाजार, हरिद्वार-249401
फोन-01334-225619

**प्रथम संस्करण 2004**



अनुवादक:
**पं० ज्वाला प्रसाद शास्त्री**

मूल्य- 40/-

**Shivarchan Paddati**

# विषय-सूची

---

*भक्तजनों से निवेदन*-इस कलिकाल में **शिवार्चन पद्धति** का पाठ सर्व फलदायक होने के साथ मुक्तिदायक भी है। नित्य पाठ से जो आनन्द की अनुभूति होती है, वह पाठ करने वाले भली प्रकार जानते हैं। किसी भी सत्य कार्य में सहायता देना भी भक्ति का अंग है। इस पुस्तक दान भी उत्तम परमार्थ है। धन के दान की अपेक्षा इस पुस्तक का दान कई गुना उत्तम है। २१ या अधिक **शिवार्चन पद्धति** निःशुल्क वितरण के लिए लेने पर पुस्तक का लागत मात्र मूल्य लिया जाता है। विशेष जानकारी के लिए निम्न पते पर लिखें।

**कर्मसिंह अमरसिंह पुस्तक विक्रेता**

**बड़ा बाजार, हरिद्वार फोन-०१३३४-२२५६१९**

# प्रस्तावना

सत्यं शिवं सुन्दरम्'' ईश्वर सत्य है, सत्य ही शिव है और शिव ही सुन्दर है। भगवान शिव का पूजन समस्त बाधा और विपत्ति का नाशक है। शिव का पूजन समस्त दरिद्रता का शमन करने वाला मंगल को देने वाला, महापातकों को नष्ट करने वाला तथा अन्न, धन, मान, यश, आयु को देने वाला है।

सब तत्वों में विराजमान, समस्त लोकों के कर्त्ता, विश्व के भरण-पोषण करने वाले, संहारकारी, जगत्गुरु अभय तथा वरदानी, पाप और पीड़ा के नाशक, प्रकाशमान शिव ही हैं।

भगवान शिव को प्रसन्न कर सुर, असुर, नाग, किन्नर, नर और मुनियों ने अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष की प्राप्ति की है। मनुष्य मात्र संसार में सब कुछ प्राप्त करने के बाद फिर भी अपने को अपूर्ण महसूस करता है पुनः कुछ पाने की अभिलाषा जागृत हो जाती है और अपने स्वार्थ तथा कुछ अन्य की प्राप्ति के लिए भटकता ही रहता है। मनुष्य सुन्दर शैय्या खरीद सकता है परन्तु नींद नहीं, पौष्टिक भोजन खरीद सकता है परन्तु भूख नहीं खरीद सकता। जीवन में शांति की कमी ही मनुष्य को भटकने के लिए मजबूर कर देती है। जिस दिन मनुष्य जीवन में शांति का प्रवेश हो जाएगा। मनुष्य की सम्पूर्ण अभिलाषा पूर्ण हो जाएगी।

पूर्ण तो शिव ही है और शिव के पूजन से ही जीवन में पूर्णता तथा शान्ति का प्रवेश हो जाएगा। उन प्राणियों का

जीवन धन्य है जो 'शिव की पूजा', ध्यान और सेवा करते हैं। शिव का दर्शन तो सब पापों का नाशक है –

**प्रातःकाले शिवंदृष्टवा निशापापं विनश्यति।**
**आजन्म कृत मध्याह्ने सायाह्ने सप्तजन्मनि॥**

भगवान शिव तो आशुतोष है जल्दी ही प्रसन्न होने वाले हैं। धतूरापुष्प, विल्वपत्र, गंगाजल से प्रसन्न होने वाले है, उनका यदि कोई श्रद्धा भक्ति से पूजन करे तो उसकी मनोकामना अवश्य ही पूर्ण होगी और जीवन में शान्ति का प्रवेश हो जाएगा।

शिव पूजन की अनेक पुस्तके आज कई विद्वानों ने हिन्दू समाज को दी परन्तु इस पुस्तक में शान्तिपाठ, ब्राह्मण वरण, गणेश पूजन के साथ शिव का पूजन सविधि दिया गया है तथा पुस्तक को अनेक स्तात्रों से सुसज्जित किया गया है। भगवान शिव की पूजा करने से अवश्य ही धार्मिक जनमानस की सम्पूर्ण कामनाएं पूर्ण होंगी तथा जीवन सार्थक हो जाएगा। इन्ही शुभ कामनाओं के साथ।

आपका ही

**पं. शिवस्वरूप 'याज्ञिक'**
शिवनगरी
भाष्कर प्रयाग

२८ प्रविष्टा रामनवमी
सं. २०६०
भाष्कर प्रयाग भटवाडी
(टकनौर) उत्तरकाशी
दूरभाष ९५-०१३७४-२४-४४२४

# श्री शिवार्चन पद्धति

"श्री गणेशाय नमः"

यं ब्रह्म वेदान्त विदोबदन्ति
परं प्रधानं पुरुषं तथाऽन्ये।
विश्वोद्गतेः कारणमीश्वरं वा
तस्मै नमो विघ्नविनाशनाय॥

पूजनकर्ता पूर्व मुँह अथवा उत्तर मुंह या शिव आदि देवताओं के सामने बैठ आचमन करें:-

**ॐ केशवाय नमः स्वाहा॥ नारायणाय नमः स्वाहा। ॐ माधवाय नमः स्वाहाः॥** हाथ धो देवे-**ॐ गोविन्दाय नमः॥**

बाये हाथ में जल लेकर दायें हाथ की अनामिका अंगुष्ठ से अभिमंत्रित करें-

**ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपिवा।**
**यः स्मरेत्पुण्डरीकाक्ष स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥**

अपने शरीर पर जल के छींटे लगावे-

**ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसवऽउत्पुना-म्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्य रश्मिभिः। तस्य ते पवित्रपते पवित्रपूतस्य यत्कामः पुनेतच्छकेयम्॥**

**भूत शुद्धिः-**

**ये भूतानामधिपतयो विशिखासः कपर्दिनः।**
**तेषा ँ सहस्र योजनेऽवधन्वानि तन्मसि॥**

**आसन पूजनः-**

**अस्य श्री आसन मंत्रस्य मेरुपृष्ठ ऋषि सुतल छन्द आसनोपवेशने पूजने विनियोगः॥** जल छोड़ पृथिवी का पूजन करें-

ॐ स्योना पृथिविनो भवान्नृक्षरा निवेशनी। यच्छानः शर्म स प्रथाः।। पृथिव्यै नमः।। आधार शक्तयै नमः।। शेष नागाय नमः।। कूर्मासनाय नमः।। कमलासनाय नमः।।आवाहयामि स्थापयामि।। पूजयामि।। पूजन कर लें।
प्रार्थना-पृथिवी त्वया धृता लोका देवी त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां भद्रे पवित्रं कुरु चासनम्।।

**शिखा बन्धन-**

ॐ मानस्तोके तनये मानऽआयुषि मानो गोषु मानोऽअश्वेषु रीरिषः। मानो वीरान् रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वा हवामहे। शिखा बांध दें।

**भस्म धारण-** ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्।
यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽअस्तु त्र्यापुषम्।।

**रुद्राक्ष धारण-**ॐ त्र्यंबकं यजामहे सुगन्धिम्पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्यौर्मुक्षीय माऽमृतात्।।
मंत्र से रुद्राक्ष धारण करें।

**घण्टा पूजन-** ॐ सुपर्णोऽसिगरुत्मास्त्रिवृत्ते शिरो गायत्रं चक्षुर्वृहद्रथन्तरे पक्षौ। स्तोम आत्मा छन्दा ꣳ स्यङ्गानि यजू ꣳ षि नाम। साम ते तनुर्वामदेव्यं यज्ञायज्ञियं पुच्छं धिष्ण्याः शफाः सुपर्णोऽसि गरुत्मान्दिवं गच्छ स्वः पतः।।
घण्टा का पूजन कर वादन कर बायें पुष्प के ऊपर रख दें।

**शंख पूजनः-**

ॐ अग्निऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः तमीमहे महागयम्।। शंख का पूजन चन्दन आदि से कर

शंखध्वनी करके पुष्प के ऊपर स्थापित कर देवें।

**दीपक पूजन-ॐ अग्निर्ज्योति ज्योंतिरग्निः स्वाहा। सूर्योज्योतिज्योर्तिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वचो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्य सूर्यो ज्योतिः स्वाहा सूर्योवर्चोज्योतिर्वर्चः स्वाहा॥**

दीपक का पूजन गन्ध अक्षतादि से कर भैरव का पूजन भी करें।

**प्रार्थना-**

**भो दीपदीप रूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्नकृत।**
**यावत्कार्य समाप्तिः स्यातावदत्र स्थिरौ भव॥**
**तीक्ष्ण द्रष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम।**
**भैरवाय नमस्तुभ्यंमनुज्ञां दातुमर्हसि॥**

**ब्राह्मण पूजन-**

**ॐ ब्राह्मणमद्य विदेयं पितृमन्त**
**पैतृमत्य मृषिमाषेय ँ सुधातु दक्षिणम्।**
**अस्मद्राता देवत्रा गच्छत प्रदातार माविशत्॥**

यजमान ब्राह्मण का पूजन गन्ध अक्षतादि से कर प्रार्थना करें-

**नमः ब्रह्मण्य देवाय गौ ब्राह्मण हिताय च।**
**जगद्हिताय कृष्णाय गोविन्दाय नमो नमः॥**

**यजमान तिलक मंत्रः-**

**ॐ यु जंतिव्रध्नंमरुषंचरंतं परितस्तुषः रोचन्ते रोचनादिवि। युजन्त्यस्य काम्याहरी विपक्षसारथे। शोणाधृष्णुनृवाहसा॥**

# "शान्तिपाठ"

ॐ आनो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धा-सोऽअपरीतास उद्भिदः। देवानो यथासदमिद् वृधे असन्नप्रायुवोरक्षितारो दिवेदिवे॥१॥ देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवाना ॐ रातिरभि नो निवर्तताम्। देवाना ॐ सख्यमुपसेदिमा वयं देवानऽ आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥२॥ तान् पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्र मदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्य्यमणं वरुण ॐ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥३॥ तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तात्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं घृष्ण्या युवम॥४॥ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियंजिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेद सामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥५॥ स्वस्ति नऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽ अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥६॥ पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभंयावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवाऽअवसागमन्निह॥७॥ भद्रंकर्णेभिः श्रुणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षमिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैः तुष्टुवा ॐ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥८॥ शतमिन्नु शरदोऽअन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषतायुर्गन्तोः॥९॥ अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता

स पिता स पुत्रः। विश्वेदेवाऽ अदितिः पंच जना ऽ अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम्॥१०॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ँ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि॥११॥ यतोयतः समीहसे ततो नो ऽ अभयं कुरु शन्नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः॥१२॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यद्भद्रं तन्न ऽ आसुव॥१३॥ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणात्वां प्रियपति ँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥१४॥ अम्बे ऽ अम्बिकेऽम्बालिके नमानयति कश्चन्। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्॥१५॥ सुशान्तिर्भवतु॥

## "चतुर्दश नमस्कार"

ॐ श्रीमन्नमहागणाधिपतये नमः॥ ॐ लक्ष्मी-नारायणाभ्यां नमः॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः॥ ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः॥ ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः॥ ॐ मातृपितृचरणकमलेभ्यो नमः॥ ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः॥ ॐ कुलदेवताभ्यो नमः॥ ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः॥ ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः॥ ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः॥ ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः॥ ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः॥ ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्न-महागणाधिपतये नमः॥

# "गणेश स्मरण"

दूर्वाक्षत हाथ में रख गणेश का स्मरण करें-

ॐ सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥१॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥२॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
सङ्ग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥३॥
शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥४॥
अभिप्सितार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुराऽसुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥५॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥६॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो माँ ये जनाः पर्युपासते।
तेषां नित्याभियुक्ताना योगक्षेमं वहाम्यहम्॥७॥
स्मृतेः सकलकल्याणं भाजनं यत्र जायते।
पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥८॥
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः।
देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥९॥
वक्रतुण्ड! महाकाय! कोटिसूर्यसमप्रभः।
निर्विघ्नं कुरु मे देव! सर्वकार्येषु सर्वदा॥१०॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः।
येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जर्नादनः॥११॥
विनायकं गुरु भानु ब्रह्माविष्णु महेश्वरान्।
सरस्वती प्रणम्यादौ सर्वकार्यार्थ सिद्धये॥१२॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेवलक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगंस्मरामि॥१३॥
विश्वेशं माधवं ढुण्डि दण्डपाणिं च भैरवम्।
वन्दे काशीं गुहां गङ्गा भवानी मणिकर्णिकाम्॥१४॥
सर्व मङ्गल माङ्गल्यै शिवे सर्वार्थसाधिके!।
शरण्ये त्र्यम्बकेगौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥१५॥

दूर्वाक्षत गणेश को अर्पण कर दें।

---

# "संकल्प"

यजमान दायें हाथ में जल, अक्षत, पुष्प, द्रव्य रख संकल्प कहें-

**ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्द्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टा-विंशतितमे कलियुगे तत्प्रथम चरणे भरतखण्डे भारतवर्षे आर्यावर्तान्तर्गत अमुक क्षेत्रे विक्रमशके बौद्धावतारे प्रभवादिषष्ठि संवत्सराणांमध्ये अमुक नाम संवत्सरे अमुकायने अमुकऋतौ महामांगल्यप्रदेमासोत्तमे अमुकमासे अमुकपक्षे अमुकतिथौ अमुकवासरे अमुकनक्षत्रे अमुकयोगे अमुककरणे अमुकराशिस्थिते चन्द्रे अमुकराशिस्थिते सूर्ये अमुकराशिस्थिते देवगुरौ शेषेषु ग्रहेषु यथा-यथा राशिस्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गुणविशेषण विशिष्टायां शुभपुण्य तिथौ अमुकगौत्रोत्पन्नः अमुक शर्माऽहं सपत्नीकः ममात्मनः श्रुति-स्मृति-पुराणोक्त फलप्राप्त्यर्थं ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थं अप्राप्त लक्ष्मीप्राप्त्यर्थं प्राप्तलक्ष्म्याश्चिरकाल संरक्षणार्थं सकलमनईप्सित- कामनासंसिद्धयर्थं लोके वा सभायां राजद्वारे वा सर्वत्र यशोविजयलाभादि प्राप्त्यर्थं इह जन्मनि जन्मान्तरे वा सकलदुरितोपशमनार्थं कायिकवाचिक-मानसिकसांसर्गिक चतुर्विधपातकदुरितक्षय द्वारा मम**

सभार्यस्य सपुत्रस्य सबान्धवस्य अखिलकुटुम्ब सहितस्य समस्त भय-व्याधि-जरा- पीड़ा-मृत्युपरिहार द्वारा आयुरारोग्य ऐश्वर्याभिवृद्धयर्थ श्रीभवानीशंकर महारुद्र देवताप्रीत्यर्थ यथाज्ञानेन यथामिलितोपचार द्रव्यैः ध्यानावाहनादि शोडषोपचारैः दुग्ध धारया जलधारया वा शिवपूजनमहं करिष्ये॥ तदङ्गत्वेन गणपति नन्दीश्वरं वीरभद्रादीनां पूजनं च करिष्ये॥

संकल्प छोड़कर गणेश मूर्ति अथवा गोमय से गौरी, पूगीफल में गणेश स्थापना कर पूजन करें।

## "श्री गणेश पूजन"

**ध्यानः-**

उच्चैब्रह्मण्डखण्डद्वितीय सहचरं कुम्भयुग्मं दधानम्।
प्रेङ्मुखं नागारिपक्ष प्रतिभटविकट श्रोत्रतालाभिरामम्॥
देवं शम्भोरपत्यं भुजगपतितनुस्पर्धिवर्धिष्णुहस्तम्।
ध्याये पूज्यार्थमीशं गणपतिममलं धीश्वरं कुंजरास्याम्॥

**आवाहनः-**

एह्येहि हेरम्ब महेश पुत्र समस्तविघ्नौघविनाश दक्ष।
माङ्गल्यपूजा प्रथम प्रधानं गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते॥

हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शंकरप्रियाम्।
लम्बोदरस्य जननीं गौरीमावाहयाम्यहम्॥

विनियोग- गणनात्वेति प्रजापतिऋषि यजुश्च्छन्दो गणपति देंवता गणपत्यावाहने पूजने विनियोगः।।

एक आचमन जल छोड़ दें।

**प्रतिष्ठापन-**

ॐ गणानान्त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति ँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति ँ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्ब्भधमा त्वमजासि गर्ब्भधम्।। गणपतये नमः, आवाहयामि स्थापयामि।। ॐ अम्बेऽअम्बिकेऽम्बालिके न मानयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम्। गौर्ये नमः, आवाहयामि स्थापयामि।।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तन्नोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽ इह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ।।

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च।
अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।।
गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।।

**आसन-**

ॐ पुरुष ऽ एवेद ँ सर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।
उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्व शान्ति करं शुभम्।
आसनं च मयादत्त गृहाणं परमेश्वर।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि (अथवा) आसनार्थेऽक्षतान् समर्पयामि।।

**पाद्यः-**

ॐ एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पूरुषः।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।
गंगोदकं निर्मलं च सर्व सौगन्ध्य संयुतम्।
पाद प्रक्षालनार्थाय अर्पयामि सुरेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पाद्यं समर्पयामि।।

**अर्घ्यः-**

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहा भवत्पुनः।
ततोविष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशने ऽ अभि।।
स्वर्ण पात्रं स्थितं तोयं पुष्प गन्धाक्षतैर्युतम्।
सहिरण्यददाम्यर्घ्यं गृहाण गणनायक।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अर्घ्यं समर्पयामि।।

**आचमनः-**

ॐ इमम्मे वरुण श्रुधिहवामद्या च मृडय।
त्वाम वस्युराचके।।
सर्वतीर्थ समायुक्तं सुगन्धि निर्मलं जलम्।
आचम्यतां मयादत्तं गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः आचमनं समर्पयामि।।

**स्नानीय जलः-**

ॐ तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।
पशूस्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये।।

गंगा-सरस्वती-रेवा-पयोष्णी नर्मदा जलैः।
स्नापितोऽसि मयादेव सर्वशान्ति कुरुष्व मे॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानं समर्पयामि॥

**दुग्ध स्नानः-**

ॐ पयः पृथिव्याम्पय ऽ ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्॥

कामधेनु समुद्भूतं सर्वेषां जीवनं परम्।
पावनं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमयार्पितम्॥

दुग्ध से गणेश अम्बिका का स्नान करें। पुनः आचमन।

**दधि स्नान-**

ॐ दधि क्राव्णो ऽअकारिषंजिष्णोरश्वस्य वाजिनः॥
सुरभि नो मुखा करत्प्रण ऽआयू ᳪषितारिषत्॥
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभमृ।
दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका का दधि से स्नान कर पुनः जल से स्नान करवायें।

**घृत स्नानः-**

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्बस्य धाम। अनुष्यवधमावह मादयस्व स्वाहा कृतं वृषभ वक्षि हव्यम्॥

नवनीत समुत्पन्नं सर्वसन्तोष कारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका का स्नान घी से कर देवें। पुनः आचमन जल से स्नान करावें।

**मधु स्नानः-**

ॐ मधुव्वाता ऽऋतायतेमधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्त मुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रज मधु द्यौर स्तुनः पिता। मधुमान्नो व्वनस्पति र्म्मधुमाँ। अस्तु सूर्यः माध्वी र्ग्गावो भवन्तु नः॥

तरुपुष्प समुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नार्थं प्रतिग्रह्यताम्॥

गणेश अम्बिका को मधु से स्नान करवाकर पुनः आचमन जल से स्नान करावें।

**शर्करा स्नानः-**

ॐ अपा ँ रसमुद्वयस ँ सूर्येसन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्य यो रस स्तं त्वोगृह्णा म्युत्तममुपयाम गृहीतो सीन्द्रायत्वा जुष्टं गृह्णांमेषते योनि रिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

**पंचामृतस्नानः-**

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशेभवत्सरित्॥
पंचामृतमयाऽनीतं पयोदधि घृतं मधु।
शर्करा च समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

गणेश अम्बिका को पंचामृत से स्नान करवा पुनः जल से स्नान करावें।

**उद्वर्त स्नानः-**

ॐ गन्धर्वस्त्वा व्विश्वावसुः परिदधातु विश्वस्यारिष्टयै यजमानस्य परिधिरस्यग्निरिडऽईडितः॥

नाना सुगन्धद्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
उद्वर्तनं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उद्वर्तस्नानं समर्पयामि।
उद्वैर्तस्नानांते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

**शुद्ध स्नानः-**

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त-ऽआश्विनाः श्येतः श्येताक्षोरुणस्तेरुद्द्राय पशुपतये कर्णायामा ऽ अवलिप्तारौद्रानभोरूपाः पार्जन्याः॥

कावेरी नर्मदावेणी तुंगभद्रा सरस्वती।
गंगा च यमुना तोयं स्नानार्थं मायार्पितम्॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धस्नानं समर्पयामि॥

**वस्त्रः-**

ॐ युवा सुवासाः परिवीतऽआगात्सउश्रेयान्भवति जायमानः। तं धीरासः कवयऽउन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

सर्वभूषादिमे सौम्ये लोकलज्जानिवारणे।
मयोपपादिते तुभ्यं वासांसी प्रतिगृह्यताम्।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमन समर्पयामि॥

उपवस्त्रः-

ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथमास दत्त्स्वः।
वासोऽअग्ने विश्वरूप ँ संव्ययस्व विभावसो॥
उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने।
भक्त्या समर्पि देव गृहाण परमेश्वरः॥
गणेशाम्बिका॰ नमः उपवस्त्रं समर्पयामि।
गणेशाम्बिकाभ्यां वस्त्रोत्तरे आचमनं समर्पयामि॥

यज्ञोपवीतः-

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमुस्तु तेजः॥
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्त गृहाण परमेश्वर॥
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि।
गणेशाम्बिकाभ्यां आचमनं समर्पयामि॥

चन्दनः-

ॐ त्वां गन्धर्वा ऽ अखनँ स्त्वामिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमो राजा विद्द्वान्यक्ष्मादमुच्यत॥
श्री खण्ड चन्दनं दिव्य केशरादि समन्वितम्।
गन्धं गृहाण देवेश मम सौख्य विवर्धयः।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः चन्दनं समर्पयामि॥

अक्षतः-

अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रियाऽअधूषत अस्तोषत। स्वभानवो
विप्रा न विष्ठयामती योजान्विन्द्र ते हरि॥

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः।
मया निवेदिताः भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

पुष्पः-

ॐ औषधीः प्रतिमोद्ध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।
अश्वाऽइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः।।
मल्लिकादि सुगन्धिनि मालत्या दीनि वै प्रभो।
मया हृतानि पूजार्थ पुष्पाणि प्रतिगृह्यताम्।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि।।

दूर्वांकुरः-

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।
दूर्वांकुरान्सुहरितान तथा च मंगल प्रदान्।
आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः दूर्वांकुरान्समर्पयामि।

सौभाग्यद्रव्यः-

ॐ अहिरिव भोगेः पर्येति बाहुं ज्यायां हेति परिबाध मानः। हस्ताघ्नो विश्वा वयुनानि विद्द्वान् पुमान् पुमा ँ सं परिपातु विश्वतः।।

हरिद्रा कुंकुमं चैव सिन्दूरादि समन्वितम्।
सौभाग्य द्रव्य संयुक्तं गृहाण परमेश्वर।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि।।

धूपः-

ॐ अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्रा धूपयामि देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे। अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्रा धूपयामि देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे। अश्वस्य त्वा वृष्णः शक्रा धूपयामि देवयजने पृथिव्याः। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे। मखाय त्वा मखस्य त्वा शीर्ष्णे॥

वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो सुमनोहर।
आध्रेय सर्व देवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपं आघ्रापयामि।

दीपः-

ॐ अग्नि ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्योज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥ साज्यं च वर्ति सुयंक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यतिमिरापहः॥ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपं दर्शयामि। हस्तप्रक्षालनम्।

नैवेद्यः-

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्र दातारं तारिषऽऊर्जं नोदेहि द्विपदे चतुष्पदे॥
घृतपक्वहविष्यानं पायसं च शकर्करम्।
नानाविधिं च नैवेद्यं गृहाण परमेश्वर॥

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं निवेदयामि।।
आचमनीयं जलं समर्पयामि। मध्ये पानीयं समर्पयामि।
उत्तरापोशनं समर्पयामि।।

ताम्बूलः-

उतस्मास्य द्रवतस्तुरण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः।
श्येनस्येव ध्रजतोऽअंकसं परिदधिक्राव्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा।।

पूगीफल महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलादिचूर्ण संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः मुखशुद्ध्यर्थं ताम्बूलं समर्पयामि।।

दक्षिणा-

ॐ हिरण्यगर्भः समवर्त्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
स दा धार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम।।

हिरण्यंगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलद मतः शान्तिं प्रयच्छ मे।।

गणेशाम्बिकाभ्यो नमः द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि।।

ऋतुफलः-

ॐ याः फलिनीर्याऽअफलाऽअपुष्पायाश्च पुष्पिणिः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्व ᳬहसः।

फलेन फलितं देव त्रैलोक्यं स चराचरम्।
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णा सन्तु मनोरथाः।।

गणेशाम्बिका भ्यां नमः। ऋतुफलं समर्पयामि।।

## विशेषार्घ्य:-

ॐ रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक। भक्तानामभयंकर्ता त्राता भव भवार्णवात॥१॥ द्वैमातुर कृपासिन्धोषाण्मातुरग्रज प्रभो। वरद त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद॥२॥ गृहाणार्घ्यमिमं देव सर्वदेव नमस्कृतः अनेन सफलार्घ्येण फलदोऽस्तु सदा मम॥३॥ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः विषेषार्घ्यं समर्पयामि।

## प्रार्थना:-

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय
नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥
भक्तार्तिनाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय।
विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्त प्रसन्न वरदाय नमो नमस्ते॥

नमस्ते ब्रह्म रूपाय विष्णुरूपाय ते नमः।
नमस्ते रुद्र रूपाय करिरूपाय ते नमः॥
विश्वरूप स्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणे।
भक्तप्रियाय देवाय नमस्तुभ्यं विनायक॥

त्वां विघ्नशत्रुदलनेति च सुन्दरेति भक्तिप्रदेति सुखदेति फलप्रदेति।
विद्याप्रदेत्यघहरेति च ये स्तुवन्ति तेभ्यो गणेश वरदो भव नित्यमेव॥

लम्बोदर! नमस्तुभ्यं! सततं मोदकप्रिय।
अविघ्नं कुरु मे देव सर्वे कार्येषु सर्वदा॥
अनया पूजया श्री गणेशाम्बिके प्रियेतां न मम।

॥ इति गणेशाम्बिका पूजनम् ॥

# ॥ ब्राह्मण वरण ॥

यजमान हाथ में वरण सामग्री अथवा वरण निष्क्रय द्रव्य लेकर संकल्प करे-

**देशकालौ सङ्कीर्त्य** (देशकाल का स्मरण करें) **अमुक गोत्रः अमुकशर्माऽहम् शिवार्चन कर्मणि एभिर्वरण द्रव्यैः पाठकरणार्थं अमुक गोत्र अमुक शर्माणं ब्राह्मणं त्वां वृणे ( अथवा ) अमुकामुक गोत्रान्नानाशर्मब्राह्मणान् युष्मान् वृणे॥** ब्राह्मण कहे-**वृतोऽस्मि प्रतिवचनम्। ( अथवा ) 'वृता स्मः'।**

यजमान ब्राह्मण के हाथ में रक्तसूत्र से रक्षाबन्धन करे-

**रक्षाबन्धनः-**

**ॐ यदाबध्नन्दाक्षायणा हिरण्य ँ शतानीकाय सुमनस्यमानाः। तन्म ऽ आबध्नामि शतशारदा-यायुष्मांजरदष्टिर्यथासम्॥**

यजमान के हाथ में रक्षा सूत्र बांधने का मंत्र-

**ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षा माप्नोतिदक्षिणाम्। दक्षिणां श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते॥१॥**

॥ इति ब्राह्मण वरण ॥

**विष्णु ध्यानः-**

**सशङ्ख चक्रं सकिरीट कुण्डलम्।**<br>
**सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम्॥**<br>
**सहारवक्षः स्थल कौस्तुभश्रियं।**<br>
**नमामि विष्णुं शिरसा चतुर्भुजम्॥**

**सूर्य ध्यानः-**

नमो नमस्तेऽस्तु सदा विभावसो।
सर्वात्मने सप्त हयाय भानवे॥
अनन्तशक्तिर्मणि भूषणेन
ददस्व भक्तिं मम मुक्तिमव्ययाम्॥

**देवी ध्यानः-**

देवी प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद प्रसीदमातर्जगतोऽखिलस्य।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य॥

---

अथ

# शिव पूजन प्रयोग

**नन्दीश्वर पूजनः-**

**ॐ आयंगौः पृश्निर क्रमीदसदन्मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः॥**

नन्दीश्वर का पूजन गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक आदि से कर देवें।

**वीरभद्र पूजनः-**

**ॐ भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्रा। स्थिरैरङ्गैस्तष्टुवा ँ सस्तनूभि-र्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥**

वीरभद्र का पूजन गन्ध अक्षतपुष्प धूप दीपक आदि से कर देवें।

**कार्तिक पूजनः-**

**ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमानऽउद्यन्त्समुद्रा दुत वा पुरीषात् श्येनस्यपक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्त्यं महिजातं ते अर्वन्॥**

स्वामी कार्तिकेय का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, दीपक, नवैद्य आदि से कर देवें।

**कुबेर पूजनः-**

**ॐ कुविदङ्गयवमन्तो यवचिद्यथा दान्त्यनुपूर्वं वियूय इहेहैषां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिषो नम उक्ति यजन्ति॥**

कुबेर का पूजन गन्ध, अक्षत, पुष्प, दीपक, नवैद्य से कर देवें।

**कीर्तिमुख पूजनः-**

ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा गणपतये स्वाहा भिभुवे स्वाहा धिपतये स्वाहा शूषाय स्वाहा स ॐ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवापतये स्वाहा॥

कीर्तिमुख का पूजन गन्धक्षतादि से कर देवें।

## ॥ शिव न्यास विधान ॥

ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतोत ऽ इषवे नमः।
बाहुभ्या मुत ते नमः। वाम करे॥१॥

दाये हाथ से वाम हाथ का स्पर्श करें।

ॐ या ते रुद्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी।
तयानस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि॥
दक्षिण करे॥ २॥

बायें हाथ से दाहिने हाथ का स्पर्श।

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे।
शिवांगिरित्रतां कुरु माहि ॐ सीः पुरुषं जगत्॥
वामपादे ॥३॥

दाहिने हाथ से बाये पैर का स्पर्श।

ॐ शिवेनवचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि॥

यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म ꣳ सुमना असत्॥
दक्षिण पादे ॥४॥ दायें पैर का स्पर्श।
ॐ अध्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परा सुवः॥
वाम जानौ॥५॥ बायें जंघे का स्पर्श।
ॐ असौ यस्ताम्रो ऽ अरुण ऽ उत बभ्रु सुमङ्गलः।
ये चैन ꣳ रुद्रा अभितो दिक्षुश्रिताः सहस्रशोऽवैषाꣳ
हेड ई महे॥ दक्षिण जानौ॥६॥ दायें जंघे का स्पर्श।
ॐ असौ यो ऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः।
उतैनं गोपा ऽ अदृश्रन्नदश्रन्नुदहार्यः स दृष्टो मृडयाति
नः॥ वाम कट्याम्॥७॥ बायें कटि प्रदेश का स्पर्श।

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय सहस्राक्षाय मीढुषे।
अथो ये ऽअस्य सत्वानोऽहं तेभ्यो करं नमः॥

दक्षिण कट्याम्॥८॥ दक्षिण कटि प्रदेश का स्पर्श।
ॐ प्रमुञ्च धन्वनस्त्वमुभयोरात्न्योर्ज्याम्।
याश्च ते हस्तऽइषवः ऽपरा ता भगवोवप॥
॥ नाभौ॥ ९॥ नाभि का स्पर्श।

ॐ विज्यं धनुः कपर्द्दिनो विशल्योवाणवाँ२उत।
अनेशन्नस्य या ऽ इषव ऽ आभुरस्य निषङ्गधिः॥

॥ हृदये ॥१०॥ हृदय का स्पर्श।

ॐ या ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥

॥ वाम कुक्षौ॥११॥ बायें कोख का स्पर्श।

ॐ परि ते धन्वनो हेतिरस्मान्वृणक्तु विश्वतः।
अयो य ऽ इषुधिस्तवारे ऽ अस्मन्निधेहितम्॥
॥ दक्षिण कुक्षौ॥१२॥ दक्षिण कोख का स्पर्श।

ॐ अवतत्य धनुष्ट्व ँ सहस्राक्ष शतेषुधे।
निशीर्य शल्यानां मुखा शिवोनः सुमना भव॥
॥ कण्ठे ॥१३॥ कण्ठ का स्पर्श।

ॐ नमस्त ऽआयुधायानातताय धृष्णवे।
उभाभ्यामुत ते नमो वाहुभ्यां तव धन्वने॥
॥ मुखे ॥ १४॥ मुख का स्पर्श।

ॐ मा नो महान्तमुत मानोऽअर्भकं मानऽउक्षन्तमुत मान ऽउक्षितम्। मानो वधीः पितरं मोत मातरं मा नः प्रियास्तन्नो रुद्र रीरिषः॥
॥ अक्ष्णो॥१५ आंखों का स्पर्श।

ॐ मानस्तोके तनये मा न ऽ आयुषि मा नो
गोषु मा नो ऽ अश्वेषु रीरिषः। मा नो वीरान
रुद्र भामिनो वधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे।
॥ मूर्ध्नि ॥ १६॥ शिखा का स्पर्श करें।

## ॥ षडङ्ग न्यास॥

ॐ मनोजूतिर्ज्जुषतामाज्जस्यबृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तन्नो त्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवास ऽ इहमादयन्तामो ३ प्रतिष्ठ॥ ॐ हृदयाय नमः ॥१॥ हृदय का स्पर्श।

ॐ अबोद्ध्यग्निः समिधाजनानाम्प्रतिधेनुमिवायती मुखासम्। यह्वा ऽइव प्रवयामुज्जिहानाः प्रभानवः सिस्रतेनामकमच्छ॥ ॐ शिरसे स्वाहा॥२॥ शिर का स्पर्श।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो ऽअरतिम्पृथिव्यावैश्वानर मृतऽआजातमग्निम्। कवि ँ सम्राजमतिथिञ्जनामा सन्ना पात्रञ्जन यन्त देवाः॥ ॐ शिखायै वषट्॥३। शिखा का स्पर्श करें।

ॐ मर्म्माणितेव्वर्म्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा-राजामृतेनानुवस्ताम्। उरोर्व्वरीयोव्वरुणस्तेकृणोतुजयन्त-न्त्वानु देवामदन्तु॥ ॐ कवचायहुम्॥४॥ दोनों भुजाओं का स्पर्श।

ॐ विश्वतश्चक्षुरुतविश्वतोमुखोविश्वतो-बाहुरुतविश्वतस्पात्। सम्बाहुब्भ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावा भूमि जनयन्देव एकः॥ ॐ नेत्रत्रयाय वौषट्॥५॥ नेत्रों का स्पर्श।

ॐ मानस्तोके तनयेमानऽआयुषिमानो गोषुमानोऽ-अश्वेषुरीरिषः। मानोव्वीरान् रुद्रभामिनो व्यधीर्हविष्मन्तः सदमित्वाहवामहे॥ ॐ अस्त्राय फट्॥६॥

शिर के ऊपर दायें हाथ के कंधे के ऊपर से दाहिना हाथ ले जाकर बाये हाथ में ताली बजायें।

॥ इति न्यास विधानम्॥

# शिव वन्दना

वन्दे देवमुपापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनां पतिम्।
वन्दे सूर्य-शशाङ्क-वह्निनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।१।।
वन्दे सर्वजगद्-विहारमतुलं वन्देऽन्धक-ध्वंसिनं
वन्दे देवशिखामणिं शशिनिभं वन्दे हरेर्वल्लभम्।
वन्दे नाग-भुजंग-भूषणधरं वन्दे शिव चिन्मयं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।२।।
वन्दे दिव्यमचिन्त्यमद्वयमहं वन्देऽर्कदर्पापहं
वन्दे निर्मूलमादिमूलमनिशं वन्दे मखध्वंसिनम्।
वन्दे सत्यमनन्तमाद्यमभय वन्देऽतिशान्ताकृति
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।३।।
वन्दे भूरथमम्बुजाक्ष-विशिखं वन्दे श्रुतीघोटकं
वन्दे शैलशरासनं फणिगुणं वन्देऽधितूणीरकम्।
वन्दे पद्मजसारथिं पुरहरं वन्दे महाभैरवं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।४।।
वन्दे पञ्चमुखाम्बुजं विनयनं वन्दे ललाटेक्षणं
वन्दे व्योमगतं जटासुमुकुटं चन्द्रार्धगंगाधरम्।
वन्दे भस्मकृत-त्रिपुण्ड्रजटिलं वन्देऽष्टमूर्त्यात्मकं

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh

वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।५।।
वन्दे कालहरं हरं विषधरं वन्दे मृडं धूर्जटिं
वन्दे सर्वगतं दयामृतनिधिं वन्दे नृसिंहापहम्।
वन्दे विप्र-सुरार्चितांघ्रि-कमलं वन्दे भगाक्षापहं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।६।।
वन्दे मंगलराजताद्रि-निलयं वन्दे सुराधीश्वरं
वन्दे शङ्करमप्रमेयमतुलं वन्दे यमद्वेषिणम्।
वन्दे कुण्डिलराज-कुण्डलधरं वन्दे सहस्राननं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।७।।
वन्दे हंसमतीन्द्रियं स्मरहरं वन्दे विरूपेक्षणं
वन्दे भूतगणेशमव्ययमहं वन्देऽर्थ-राज्य-प्रदम्।
वन्दे सुन्दर-सौरभेय-गमनं वन्दे त्रिशूलायुधं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।८।।
वन्दे सूक्ष्ममनन्तमाद्यमभयं वन्देऽन्धकारपहं
वन्दे रावण-नन्दि-भृंगि-विनतं वन्दे सुपर्णावृत्तम्।
वन्दे शैलसुतार्धभागवपुषं वन्दे भयं त्र्यम्बकं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।९।।
वन्दे पावनमम्बरात्मविभवं वन्दे महेन्द्रेश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयाभरतरुं वन्दे नताभीष्टदम्।
वन्दे जह्नसुताम्बिकेशमनिशं वन्दे गणाधीश्वरं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिव शङ्करम्।।१०।।

# ॥ शिव पूजन॥

पुष्प लेकर भगवान शंकर का ध्यान करें-

ध्याये नित्यं महेशं रजतगिरिनिभं चारुचन्द्रावतंसं।
रत्नाकल्पोज्ज्वलाङ्गं परशुमृगवराभीति हस्तं प्रसन्नम्॥
पद्मासीनं समन्तात् स्तुतममरगणेर्व्याघ्र कृतिं वसानं।
विश्वाद्यं विश्वबन्धं निखिल भयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्॥

भगवान शिव को पुष्प अर्पण कर आवाहन के लिए पुनः पुष्प अर्पण करें :-

**आवाहन्**

एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे शशांक मौले वृषभाधिरुढ।
देवादिदेवेश महेश नित्यं गृहाणं पूजां भगवन्नमस्ते॥

ॐ नमः शंभवाय च मयो भवाय च नमः शङ्कराय
च मयस्कराय न नमः शिवाय च शिवतराय च॥

आराधितो मनुष्यैस्त्वं सिद्धैर्देवासुरादिभिः।
आवाहयामि भक्त्या त्वां गृहाण परमेश्वर॥

पुष्प अर्पण कर पुनः आसन के लिए पुष्प चढ़ायें :-

**आसनः-**

ॐ याते रुद्र शिवातनूर घोरा पापकाशिनी।
तयानस्तन्वासन्त मया गिरि शन्ता भि चाकशीहि॥
रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभं ।
आसनं च मयादत्तं गृहाण परमेश्वर॥

पुष्प अर्पण कर भगवान शंकर को पैर धोने के लिए जल चढ़ायें।

**पाद्य:-**

ॐ यामिषुं गिरिशन्त हस्ते विभर्ष्यस्तवे शिवां।
गिरित्र तां कुरुमा हि ७ँ सी: पुरुषं जगत्।।
शीतोदक निर्मलं च सर्वसौगन्ध संयुतं।
पादप्रक्षालनार्थाय अर्पयामि सुरेश्वर।।

भगवान शंकर के पैर धोकर हाथ धोने के लिए अर्घ्य दें:-

**अर्घ्य:-**

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि।
यथा नः सर्वामिज्जगदयक्ष्य ७ँ सुमनाऽअसत्।।
अर्घ्यं गृहाण देवेश गन्ध पुष्पाक्षतैर्युतः।
हस्तप्रक्षालनार्थाय गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते।।

अर्घ्य देकर आचमन अर्पण करें :-

**आचमन:-**

ॐ अद्य वोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्योभिषक्।
अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्तसर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः परासुवः।।

सर्वतीर्थ समायुक्तं गंगायांनिर्मलं जलम्।
आचम्यतां मयादत्तं गृहाण परमेश्वर।।

आचमन जल चढ़ाकर स्नान के लिए जल छोडें-

**स्नान:-**

ॐ असौयस्ताम्रोऽअरुणऽउत वभ्रुः सुमंगलः। ये चैन७ँ रुद्राऽअभितो दिक्षु श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषा७ँहेडऽईमहे।।

**गंगासरस्वती कृष्णा पयोष्णि नर्मदा जलैः।**
**स्नापितोसि मया देव तथा शान्तिकुरुष्व मे॥**

भगवान शंकर को जल से स्नान करा के गन्धोदक स्नान करायें :-

**गन्धोदक स्नानः-**

**ॐ अ ꣳ शुनाते अ ꣳ सुः पृच्यतां परुषा परुः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः॥**

**मलयाचल संभूतं चन्दना गरु संयुतं।**
**चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥**

गन्धमिश्रित जल से स्नान करवा के भगवान शंकर को दूध से स्नान करवायें :-

**पयस्नानः-**

**ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयोदिव्यन्तरिक्षे पयो धाः पयस्वतीः प्रदिशः सन्तुमह्यम्॥**

**कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परं।**
**पावनं देवहेतुश्च पयः स्नानार्थमयार्पितम्।**
**पय स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि।**

(शुद्ध जल से स्नान करायें)

**दधिस्नानः-**

**ॐ दधि क्राव्णो अकारिषं जिष्णो रस्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ꣳ षि तारिषत॥**

**पयसस्तु समुद्भूत मधुराम्लं शशिप्रभम्।**
**दध्यानीतं मयादेव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥**

**घृतस्नानः-**

ॐ घृतंमिमिक्षे घृतमस्ययोनिघृतेश्रितो घृतम्बस्यधाम। अनुष्वधमावहमादयस्व स्वाहा कृतं वृषभवक्षि हव्यम्॥

नवनीत समुत्पन्नं सर्व सन्तोषकारकम्।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं मयार्पितम्॥

घी से स्नान कराके जल से स्नान करायें।

**मधु स्नानः-**

ॐ मधुव्वाताऽऋतायतेमधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधुनक्तमुतोषसोमधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधुद्यौरस्तुनः पिता। मधुमान्नो-वनस्पतिर्म्मधुमांऽअस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

दिव्यः पुष्पैः समुद्भूतं सर्वगुण समन्वितम्।
मधुरं पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

मधु से स्नान कराकर पुनः जल से स्नान करावें।

**शर्करा स्नानः-**

ॐ अपा ँ रस समुद्वयस ँ सूर्ये सन्त ँ समाहितम्। अपा ँ रसस्स यो रस स्तं त्वोगृह्णाम्म्युत्तममु-पयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टङ्गृह्णामेष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्॥

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारकम्।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

शर्करा स्नान कर पुनः जल से स्नान करावें।

**पंचामृत स्नानः-**

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सो देशे भवत्सरित्॥
पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम्।
पंचामृतं मयाऽनीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पंचामृत से स्नान करके पुनः शुद्ध जल से स्नान करावे-

**शुद्धोदक स्नानः-**

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालोमणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशु पतये कर्णायाम अवलिप्ता रौद्रा न भो रूपाः पार्ज्जन्याः॥

नाना सुगन्धि द्रव्यं च चन्दनं रजनीयुतम्।
गंगाजलं मयादत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

**गन्धोदक स्नानः-**

ॐ गन्ध द्वारा दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम्॥
मलयाचल संभूतं चन्दना गरु संभवम्।
चन्दनं देव देवेश स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्॥

पुनः जल से स्नान करें।

**विजयास्नानः-**

ॐ विज्यं धनुः कपर्द्दिनों विशल्योबाणवाँ२ऽ उत। अन्नेशन्नस्य या ऽ इषवऽआभुरस्य निषङ्गधिः।

**शिवप्रीतिकरं रम्यं दिव्य भाव समन्वितम्।**
**विजया च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥**

विजया स्नान कर पुनः जल स्नान करावें।

**अभिषेक स्नानः-**

शिवमहिम्न स्तोत्र अथवा रुद्रसूक्त (नमस्ते रुद्र.) के १-१६ मंत्र से शिवजी को जलधारा देवें॥

**वस्त्रः-**

**ॐ युवासुवासाः परिवीत ऽ आगात्स ऽ उश्रेयान। भवति जायमानः। तं धीरासः कवय ऽ उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥**

**सर्वभूषादिके सौम्ये लोकलज्जा निवारिणे।**
**देह लंकरण वस्त्र मतः शान्ति प्रयच्छ मे॥**

भगवान शिव को वस्त्र समर्पण कर जल छोड़ दें।

**उपवस्त्रः-**

**ॐ सुजातो ज्योतिषा सह शर्म वरुथ मासदत्स्वः।**
**वासो अग्ने विश्वरूप ँ संव्ययस्व विभावसो॥**
**शीतवातोष्ण संत्राण लज्जाया रक्षणं परम्।**
**मयोपपादिते तुभ्यं गृहेतां वाससी त्वया॥**

उपवस्त्र अर्पण कर जल छोड़ दें।

**यज्ञोपवीतः-**

**ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत् सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुंच शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥**

नवभिस्तुन्तुभियुक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मयादत्तं गृहाण परमेश्वर।।

यज्ञोपवीत अर्पण कर जल छोड़ दें।

**भस्म:-**

ॐ प्रसद्य भष्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने।
सꣳसृज्यमातृमिष्ट्वं ज्योतिष्मान् पुनरासदः।।
सर्वपाप हरं भष्म दिव्य ज्योतिसमप्रभम्।
सर्व क्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर।।

भस्म अर्पण कर दें।

**चन्दन:-**

ॐ त्वां गन्धर्वाऽअखनँस्त्वा मिन्द्रस्त्वां बृहस्पतिः।
त्वामोषधे सोमोराजा विद्वान् यक्ष्मादमुच्यत।।
श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाद्य सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।।

भगवान शंकर को चन्दन अर्पण कर दें।

**अक्षत:-**

ॐ अक्षन्न्मीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा न विष्ठया मती यो जाविन्द्रते हरी।।
अक्षताश्च सुरश्रेष्ठाः कुंकुमाक्ताः शुशोभिताः।
मयानिवेदिताः भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

भगवान शिव को अक्षत अर्पण करें।

**पुष्पः-**

**ॐ औषधीः प्रतिमोदध्वं पुष्पवतीः प्रसूवरीः।**
**अश्वाइव सजित्वरीर्वीरुधः पारयिष्णवः॥**
**माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो।**
**मया हृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर॥**

भगवान शिव को पुष्प माला अर्पण कर दें। अथवा शिव सहस्रनाम से या शतनाम से भगवान शंकर को पुष्प अर्पण कर दें। (भगवान शिव को हजार पुष्प अर्पण करने मात्र से मनोकामना पूर्ण होती है मेरा पूर्ण अनुभव है)

**एकादश बिल्वपत्र [१]**

**ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वार्म्मिणे च वरुथिने च नमः श्रुताय च श्रुत सेनाय च नमो दुन्दुब्भ्याय चाहनन्यायच॥**
**त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्र च त्रिधायुधम।**
**त्रिजन्म पाप संहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥**
**दर्शनं बिल्वपत्रस्य स्पर्शनं पापनाशनम्।**
**अघोर पाप संहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्॥**
**काशीवास निवासी च कालभैरवपूजनम्।**
**कोटिकन्यां महादानं विल्वपत्रं शिवार्पणम्॥**

---

विल्व पत्र चढ़ाने का फल-
अखण्डितैर्विल्व पत्रैः श्रद्धया स्वयमाहृतैः।
लिंगं पूजनंकृत्वा वर्ष लक्षं वसेद्दिवि॥ (कुमारिका खण्डे)

अखण्डैर्विल्वपत्रेश्च पूजये शिव शंकरम्।।
प्रयागे माघ मासे च विल्वपत्रं शिवार्पणम्।।
गृहाण बिल्व पत्राणि सुपुष्पाणि महेश्वर।
सुगन्धीनि भवानीश शिव त्वं कुसुम प्रियः।।
त्रिशाखैर्विल्वपत्रैश्च अच्छिद्रैः कोमलै शुभैः।
त्वां पूजयामि विश्वेश प्रसन्नोभव सर्वदा।।
श्रीवृक्षामृत संभूतं शंकरस्यसदा प्रियम्।
पवित्रं ते प्रयच्छामि विल्वपत्रं सुरेश्वर।।

भगवान शंकर को बिल्व पत्र गन्ध लगाकर अधोमुख चढ़ा देवें।

**दूर्वाः-**

ॐ काण्डात् काण्डात्प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि।
एवानो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च।।
दूर्वाङ् कुरान् सुहरितान् तथा च मंगल प्रदान्।
आनितांस्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर।।

भगवान शिव को दूर्वा अर्पण कर देवें।

**परिमलद्रव्यः-**

ॐ अहिरिवभोगेः पर्य्येति बाहुँ ज्यायां हेतिं परिबाधमानः। हस्तध्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ॐ सं परिपातु विश्वत।।

अबीरं च गुलालं च हरिद्रादि समन्वितम्।
नाना परिमलं द्रव्यं गृहाण परमेश्वर।।

भगवान शिव को अबीर गुलाल हरिद्रादि द्रव्य अर्पण कर दें।

**सुगन्धि द्रव्यः-**

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्द्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात॥
दिव्यगन्ध समायुक्तं महापरिमलाद्भुतम्।
गन्ध द्रव्यमिदंभक्त्या दत्तं स्वीकुर शंकर॥

## ॥ आवरण पूजन ॥

ॐ ईशानाय नमः पादौपूजयामि ॥१॥
ॐ शंकराय नमः जंघे पूजयामि ॥२॥
ॐ शूलपाणये नमः गुल्फौ पूजयामि ॥३॥
ॐ शंभवे नमः कटि पूजयामि ॥४॥
ॐ स्वयं भुवे नमः गुह्य पूजयामि ॥५॥
ॐ महादेवाय नमः नाभिं पूजयामि ॥६॥
ॐ विश्वकर्त्रै नमः उदरं पूजयामि ॥७॥
ॐ सर्वतोमुखाय नमः पार्श्वे पूजयामि ॥८॥
ॐ स्थाणवे नम स्तनौ पूजयामि ॥९॥
ॐ नीलकंठाय नमः कण्ठं पूजयामि ॥१०॥
ॐ शिवात्मने नमः मुखं पूजयामि ॥११॥
ॐ त्रिनेत्राय नमः नेत्रं पूजयामि ॥१२॥
ॐ नाग भूषणाय नमः शिरः पूजयामि ॥१३॥
ॐ देवाधि देवाय नमः सर्वाङ्ग पूजयामि ॥१४॥

अंग पूजन गन्ध अक्षत पुष्प धूप दीपक नैवेद्य दक्षिणा से कर दें।

# ॥ एकादश रुद्र पूजन॥

ॐ अघोराय नमः॥१॥ ॐ पशुपतये नमः॥२॥
ॐ शर्वाय नमः॥३॥ ॐ वीरूपाक्षाय नमः॥४॥
ॐ विश्वरूपिणे नमः॥५॥ ॐ त्र्यम्बकाय नमः॥६॥
ॐ कपर्दिने नमः॥७॥ ॐ भैरवाय नमः॥८॥
ॐ शूलपाणये नमः॥९॥ ॐ ईशानाय नमः॥१०॥
ॐ महेश्वराय नमः॥११॥

एकादश रुद्रों का पूजन गन्धक्षतादि से कर दें।

# ॥ एकादश शक्ति पूजन ॥

ॐ उमायै नमः॥१॥ ॐ शंकर प्रियायै नमः॥२॥
ॐ पार्वत्यै नमः ॥३॥ ॐ गौर्ये नमः॥४॥
ॐ काल्यै नमः॥५॥ ॐ कालिन्द्यै नमः॥६॥
ॐ कोटर्यै नमः॥७॥ ॐ विश्वधारिण्यै नमः॥८॥
ॐ विश्वेश्वर्यै नमः॥९॥ ॐ विश्वमात्रै नमः॥
१०॥ ॐ शिवायै नमः॥

एकादश शक्ति का पूजन गन्ध क्षतादि से कर दें।

# ॥ दशगण पूजन॥

ॐ गणपतये नमः॥१॥ ॐ कार्तिकाय नमः॥२॥
ॐ पुष्पदन्ताय नमः॥३॥ ॐ कपर्दिने नमः॥४॥
ॐ भैरवाय नमः॥५॥ ॐ शूलपाणये नमः॥६॥
ॐ ईश्वराय नमः॥७॥ ॐ दण्डपाणये नमः॥८॥

ॐ नन्दिने नमः॥९॥ ॐ महाकालाय नमः॥१०॥

रुद्र गणों का गन्ध क्षतादि से पूजन कर दें।

## ॥ अष्टमूर्ति पूजन ॥

ॐ भवाय क्षितिमूर्तयेनमः।१। ॐ शर्वाय जलमूर्तये नमः।२।
ॐ रुद्राय अग्निमूर्तये नमः।३। ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः।४।

ॐ भीमाय आकाशमूर्तये नमः॥५॥
ॐ पशुतपये यजमानमूर्तये नमः॥६॥
ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः॥७॥
ॐ ईशानाय सूर्यमूर्तये नमः॥८॥

अष्टमूर्तियों का पूजन गन्ध क्षतादि से कर दें।

पुनः भगवान शिव का पूजन निम्न प्रकार से करें :-

**धूपः-**

ॐ याते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः।
तयास्मान्विश्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज॥
वनस्पति रसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः।
आघ्रेय सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

भगवान शिव को धूप दिखावें।

**दीपः-**

ॐ अग्निर्ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिरग्निः स्वाहा सूर्यो ज्ज्योतिर्ज्ज्योतिः सूर्य्यः स्वाहा। अग्निर्व्वर्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्यः स्वाहा सूर्य्योव्वर्च्चोर्ज्ज्योति ज्ज्योतिर्वर्च्चः स्वाहा। ज्ज्योतिः

सूर्य्यः सूर्योज्ज्योतिः स्वाहा॥
साज्यं च वर्त्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम्॥

भगवान शिव को दीपक दिखा देवें।

**नैवेद्यः-**

ॐ अन्नपतेऽन्नस्य नो देह्यनमीवस्य शुष्मिणः।
प्रप्प्रदातारं तारिष ऽ ऊर्ज्जं नो देहि द्विपदे चतुष्पदे॥
अन्नं चतुर्विधं स्वादु रसैः षड्भिः समन्वितम्।
भक्ष्यभोज्य समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

नैवेद्य में बिल्वपत्र छोड़कर ग्रास मुद्रा दिखावें :-

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा। ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा। श्री साम्बसदा शिवाय नमः मध्ये पानीयं समर्पयामि। उत्तरापोशानं समर्पयामि। हस्तप्रक्षालनार्थ जलं समर्पयामि। करोद्वर्तनार्ते जलं समर्पयामि॥

नैवेद्य अर्पणकर जल छोड़ दें।

**ताम्बूलः-**

ॐ उत स्मास्य द्रवतस्तु रण्यतः पर्णं न वेरनुवाति प्रगर्धिनः। श्येनस्येव घ्रजतो अङ्कसं परि दधिक्राब्णः सहोर्जा तरित्रतः स्वाहा॥

पूंगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्।
एलादिचूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।।

ताम्बूल अर्पण करें।

**ऋतुफलः-**

ॐ याः फलिनीर्या ऽ अफला ऽ अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।
बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व ँ हसः।।
फलेन फलितं देव त्र्यैलोक्यं सचराचरम्।
तस्मात् फल प्रदानेन पूर्णा सन्तु मनोरथाः।।

भगवान शिव को ऋतुफल अर्पण करें।

**धतूरफलः-**

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि।
समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधीः।।
धैर्यधीर परिक्षार्थ धारितं परमेष्ठिना।
धत्तुरं कण्टकाकीर्ण गृहाण परमेश्वर।।

धतूर फल को भगवान शिव को चढ़ावे।

**दक्षिणाः-**

ॐ यद्दत्तंयत्परादानं यत्पूर्तयाश्चदक्षिणाः।
तदग्निर्वैश्वकर्मणः स्वर्द्देवेषु नो दधत्।।
हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेम बीजं विभावसो।
अनन्तं पुण्यफलदा मत्त शान्ति प्रयच्छ मे।।

विशेषार्ध्य:-

रक्षरक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।
भक्तानां अभयं कर्त्ता त्राताभव भवार्णवात॥
वरदत्त्वं वर देही वांछितं वांछितार्थद।
अनेन सफलार्ध्येण फलदोस्तु सदामम॥

प्रार्थना:-

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥१॥
अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्षस्व परमेश्वर॥२॥
मंत्र हीनं क्रिया हीनं भक्ति हीनं सुरेश्वर।
यत्पूजितं मयादेव परीपूर्ण तदस्तु मे॥३॥
यदक्षरपदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत्।
तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर॥४॥
अपराध सहस्त्राणि क्रियन्ते ऽहर्निशं मया।
दासोयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर॥५॥
करचरणं कृतं वा क्वायजं कर्मजं वा।
श्रवण नयनजं वा मानसं वाऽपराधम्॥
विहित मविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व।
जयजय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो॥६॥
कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्र हारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि॥७॥
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं ममदेव देव॥८॥

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधर मुकुटं पंचवक्र त्रिनेत्रं।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणांगे वहन्तम्॥
नागं पाशं च घंटा डमरुक सहितं चाङ्कुशं वाम भागे।
नानालंकारयुक्तं स्फटिक मणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥९॥

ॐ शिवाय नमः शिवाय नमः शिवाय नमः॥

॥ इति शिव पूजनम् ॥

## ॥ वैदिक आरती॥

ज्वालामालिन्यै नमः॥

ॐ ये देवासो दिव्येकादश स्थ पृथिव्यामध्येकादश स्थ। अप्सुक्षितो महिनैकादश स्थ ते देवासो यज्ञमिमं जुषध्वम्॥ ( यजु. ७/१९ )

ॐ आ रात्रि पार्थिव ँ रजः पितुरप्रायि धामभिः। दिवः सदा ँ सि बृहती वितिष्ठस आ त्वेषं वर्तते तमः॥ ( यजु. ३४/३२ )

ॐ इद ँ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीर ँ सर्वगण ँ स्वस्तये आत्मसनि प्रजासनि पशुशनि लोकसन्यभवसनि। अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासु धत॥ ( यजु. १९/४८ )

कदली गर्भ सम्भूतं कर्पूरं च प्रदीपितम्।
आरर्तिक्यमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव ॥

# ॥ शिव नीराजनम् ॥

जय गंगाधर हर शिव जय गिरिजाधीश, शिवजय गौरी नाथ।
त्वं मां पालय नित्यं त्वं मां पालय शंभो कृपया जगदीशा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥१॥

कैलासे गिरिशिखरे कल्पद्रुम विपिने शिवकल्पद्रुम विपिने।
गुंजति मधुकर पुंजे शिव गुजति मधुकर पुंजे कुंजवने गहने॥
कोकिल कुजति खेलत हंसावन ललिता शिवहंसावन ललिता।
रचयतिकला कलापं शिव रचयति कला कलापं नृत्यति मुदसहिता॥
ॐ हर हर हर महादेव॥२॥

तस्मिन् ललित सुदेशे शाला मणि रचिता शिव शाला मणि रचिता।
तन्मध्ये हर निकटे शिवतन्मध्ये हर निकटे गौरी मुद सहिता॥
क्रीडा रचयिता भूषा रंजित निजमीशं शिव रंजित निजमीशम्।
इन्द्रादिक सुर सेवत ब्रह्मादिक सुर सेवित नामयते शीशम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥३॥

विबुध बधू बहु नृत्यति हृदये मुदसहिता शिव हृदये मुदसहिता।
किन्नर गायन कुरुते किन्नर गायन कुरुते सप्त स्वर सहिता॥
घिनकत थै थै घिनकत मृदङ्ग वादयते। शिव मृदङ्ग वादयते।
क्वण क्वण ललिता वेणु शिवक्वण ललिता वेणुर्म धुरं नादयते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥४॥

रुण रुण चरणे रचयति नूपुर मुज्जवलिता शिव नूपुरमुज्ज्वलिताम्।
चक्रावर्ते भ्रमयति शिव चक्रावर्ते भ्रमयति कुरुते तां धिक ताम्॥

तां तां लुपचुप तां तां डमरु वादयते शिव डमरु वादयते।
अंगुष्ठांगुलिनादं शिव अंगुष्ठांगुलिनादं लासकतां कुरुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥५॥

कर्पूरद्युति गौरं पंचानन सहिता शिव पंचानन सहिता।
त्रिनयनशशिधरमौलिं शिव त्रिनय शशिधर मौलिं विषधर कण्ठ युतम्।
सुन्दर जटा कलापं पावक युत भालं शिव पावक युत भालम्।
डमरुत्रिशूलपिनाकं शिवडमरु त्रिशूलपिनाक्ंकरघृतनृकपालम्
ॐ हर हर हर महादेव॥६॥

मुण्डैरचयति माला पन्नगमुपवीतं शिव पन्नगुमपवीतम्।
वामविभागे गिरिजा वामविभागे गिरिजा रूपं अतिललितम्॥
सुन्दरसकलशरीरे कृतभस्माभरणम् शिवकृत भस्माभरणम्।
इतिवृषभध्वज रूपं हर शिव शंकर रूपं तापत्रयहरणम्॥
ॐ हर हर हर महादेव॥७॥

शंख निनादं कृत्वां झल्लरिनादयते शिव इल्लरिनादयते।
नीराजयते ब्रह्मा नीरायजते विष्णु वेदऋचा पठते॥
अतिमृदुचरण सरोजं हृतकमले धृत्वा शिवहृतकमले धृत्वा।
अवलोकयति महेशं अवलोकयति सुरेशं ईशं अभिनत्वा॥
ॐ हर हर हर महादेव॥८॥

ध्यानं आरति समये हृदये इति कृत्वा शिव हृदये इति कृत्वा।
रामं त्रिजटानाथं शिव रामं त्रिजटानाथं ईशं अभिनत्वा॥
संगतिमेवं प्रतिदिन पठनं यः कुरुते शिव पठनं यः कुरुते।
शिव सायुज्यं गच्छति हर सायुज्यं गच्छति भक्त्या यः श्रृणुते॥
ॐ हर हर हर महादेव॥९॥

# ।। आरती ।।

ॐ जय शिव ॐकारा हर शिव ॐकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, भोले भाले नाथ महादेव अर्द्धंगी धारा।
ॐ हर हर महादेव।।१।।

एकानन चतुरानन पंचानन राजै, भोले पंचानन राजै।
हंसासन गरुडासन, हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै।।
ॐ हर हर हर महादेव।।२।।

दो भुज चारु चतुर्भुज दश भुज तुम सौहे, शिव दशमुख तुम सोहै।
तीनों रूप निरखते, शंकर रूप निरखते, त्रिभुवन जन मोहे।
ॐ हर हर हर महादेव।।३।।

अक्षमाला वनमाला रुण्डमाला धारी, शिव रुण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद लेपन, चन्दन मृगमद लेपन भाले शशिधारी।।
ॐ हर हर हर महादेव।।४।।

श्वेताम्बर पीताम्बर बाघाम्बर अंगे, शिव बाघाम्बर अंगे।
सनकादिक ब्रह्मादिक, सनकादिक गरुणादिक भूतादिक संगे।।
ॐ हर हर हर महादेव।।५।।

करमध्ये च कमण्डल चक्र त्रिशूल धरता शिव चक्र त्रिशूल धरता।
जगकर्त्ता जग भर्ता, जगकर्त्ता जगभर्ता, जगपालन कर्ता।।
ॐ हर हर हर महादेव।।६।।

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका शिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ॐ अक्षर के मध्ये तुम तीनों एका।।
ॐ हर हर हर महादेव।।७।।

काशी में विश्वनाथ विराजै नन्दी ब्रह्मचारी शिवनन्दी ब्रह्मचारी।
नित उठ भोग लगावत सबदिन दर्शन पावै महिमा अतिभारी॥
ॐ हर हर हर महादेव॥८॥

शिवजी के हाथों में कंकण कानों में कुण्डल गल सर्पों की माला।
जटा में गंगा विराजे मस्तक में चन्द्र विराजे ओढ़त मृगछाला॥
ॐ हर हर हर महादेव॥९॥

त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावै शिव जो कोई सुन पावै
कहत शिवानन्द स्वामी रटत हराहर स्वामी मनवांछित फल पावे।
ॐ हर हर हर महादेव॥१०॥

# आरती गंगा जी की

ॐ जय गंगे माता, श्री जय गंगे माता।
जो नर तुमको ध्याता, मनवांछित फल पाता॥
ॐ जय गंगे माता॥१॥

चन्द्र सी जोत तुम्हारी जल निर्मल आता।
शरण पड़े जो तेरी सो नर तर जाता॥२॥
पुत्र सगर के तारे सब जग को ज्ञाता।
कृपा दृष्टि तुम्हारी त्रिभुवन सुख दाता॥३॥
एक ही बार जो तेरी शरणागति आता।
यम की त्रास मिटा कर परमगति पाता॥४॥
आरती मात तुम्हारी जो जन नित्य गाता।
दास वही सहज में मुक्ति को पाता॥५॥

# ॥ पुष्पांजलि॥

ॐ यज्ञेनयज्ञ मयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। तेहनाकं महिमान सचन्त यत्र पूर्वेसाध्याः सन्तिदेवाः॥ ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयं वै श्रवणाय कुर्म हे। समेकामान् काम कामायमह्यं कामेश्वरोवै श्रवणो ददातु। कुबेरायवैश्रवणाय महाराजय नमः॥ ॐ स्वस्ति, साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ट्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्य मयं समन्तपर्यायीस्यात्॥ सार्वभौम सार्वायुष आन्तादापरार्द्धात्। पृथिव्यै समुद्रपर्य्यन्ताया एक राडिति। तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिविष्टारोमरुतस्यावसन् गृहे। आविक्षतस्य कामप्रेवि- श्वेदेवा सभासदः॥ ॐ विश्वत श्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात्। सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत्रैर्द्यावा भूमीं जनयन् देवऽएकः॥ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नोरुद्र प्रचोदयात्

सेवन्तिकाबकुल चम्पक पाटलाब्जै
पुन्नागजाति करवीर रसाल पुष्पैः।
विल्व प्रवाल तुलसीदलमालती भी
स्त्वां पूजयामि जगदीश्वर मे प्रसीद॥
नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथाकालो भवानि च।
पुष्पाञ्जलि मयादत्तं गृहाण त्वं महेश्वर॥

मंत्र पुष्पाञ्जलि भगवान शिव को अर्पण कर शिव की अर्ध प्रदक्षिणा करें :-

ॐ सप्तास्यासन् परिधयस्त्रिः सप्तसमिधः कृताः।
देवा यद्यज्ञन्तन्वानाऽ अबधून पुरुषं पशुम्॥
यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे॥

# ।। समर्पण ।।

**करचरण कृतंवा क्वायजं कर्मजं वा**
**श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।।**
**विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्व।**
**जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।**

हे प्रभो मैंने हाथों से, पैरों से, वचन से, कर्म से, कानों से, आँखों से अथवा मन से जो भी अपराध किये हों, वे विहित हों या अविहित हो उन सबको हे करुणा के सागर श्री महादेव शम्भो क्षमा कीजिये। आपकी जय हो जय हो।।

जल सम्प्रोक्षणम्-

**ॐ शतं भवति शतायुर्वैपुरुषः शतंद्रियरैवन्द्रियं वीर्य्यं मात्मंघते ॐ स्वस्ति।।** जल के छीटें लगा देवें।

।। हरि ॐ शान्ति ।।

भगवान आपकी महिमा का वर्णन कौन लिख सकता है :-

**असित गिरि समस्यात्कजलं सिन्धु पात्रे,**
**सुर तरु वर शाखा लेखनी पत्र मूर्वी।**
**लिखति यदि गृहित्वा शारदा सर्वकालं,**
**तदपि तव गुणानां मीश पारं न याति।।**
**पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णाद् पूर्ण मुदच्यते।**
**पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्ण मेव व्शिष्यते।।**
**ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।**

**।। ॐ ।।**

।। पं. शिवस्वरूप 'याज्ञिक' संग्रहित
शिव पूजन पद्धति सम्पूर्णम् ।।

# ।। शिवस्तोत्राणि ।।

## शिवमानसपूजा

श्री गणेशाय नमः।। रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदांकितं चंदनम्। जातीचंपकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कल्पितं गृह्यताम्।।१।। सौवर्णे नवरत्नखंडरचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पंचविधं पयोदधियुतं रंभाफलं पानक्रम्। शाकानामयुतं जलं रुचि करं कपूर्रखंडोज्वलं ताम्बूलं मनसा मया विर चितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरु।।२।। छत्रं चामरयो र्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणाभेरिमृदंग काहलकगीतं च नृत्यं तथा। साष्टांगं प्रण तिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।।३।। आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं पूजा ते विषयोपभोगरचना निद्रा समाधिस्थितिः। संचारः पदयोःप्रदक्षिणविधि स्तोत्राणि सर्वा गिरो यद्यत्कर्म करोमि तत्तद खिलं शंभो तवाराधनम्।।४।। करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्। विहितमविहितं वा सर्वमेतत्क्षमस्त्र जय जय करुणाब्धे श्रीमहादेव शंभो।।५।।

इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचिता

शिवमानसपूजा समाप्त।।

# ॥शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रम्॥

शिव की प्रसन्नता के लिए पंचाक्षर का पाठ करें। शिवपंचाक्षर का पाठ करने से साधक को शिव लोक की प्राप्ति होती है।

**नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय॥**
**नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥१॥**
**मन्दाकिनीसलिलचन्दनचर्चिताय नन्दीश्वरप्रमथनाथमहेश्वराय॥**
**मन्दारपुष्पबहुपुष्पसुपूजिताय तस्मै मकाराय नमः शिवाय॥२॥**
**शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्दसूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय॥**
**श्रीनीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै शिकाराय नमः शिवाय॥३॥**
**वसिष्ठकुम्भोद्भवगौतमार्यमुनीन्द्रदेवार्चितशेखराय ॥**
**चन्द्रार्कवैश्वानरलोचनाय तस्मै वकाराय नमः शिवाय॥४॥**
**यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।**
**दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै यकाराय नमः शिवाय॥५॥**
**पञ्चाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।**
**शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते॥६॥**

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं
शिवपञ्चाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

---

# ।।शिवषडक्षरस्तोत्रम्।।

ऋषि देवताओं अप्सराओं के वन्दनीय ॐकार का ध्यान करते हुए शिवषडक्षर स्तोत्र का पाठ करने से मन को शान्ति की प्राप्ति होकर जीवन सुखमय हो जाता है तथा परलोक में शिवलोक प्राप्त कर मनुष्य शिव के साथ निवास करता है।

ॐकारं विन्दु संयुक्तं नित्यं ध्यायन्ति योगिनः।
कामदं मोक्षदं चैव ॐकाराय नमो नमः।।१।।
नमन्ति ऋषयो देवा नमत्यप्सरसां गणाः।
नरानमन्ति देवेशं नकाराय नमो नमः।।२।।
महादेवं महात्मानं महाध्यानं परायणम्।
महापापहरं देवं मकाराय नमो नमः।।३।।
शिवं शान्तं जगन्नाथं लोकानुग्रह कारकम्।
शिवमेकपदं नित्यं शिकाराय नमो नमः।।४।।
वाहनं वृषभोयस्य वासुकिः कण्ठभूषणम्।
वामे शक्तिधरं देवं वकाराय नमो नमः।।५।।
यत्र यत्र स्थितो देवः सर्वव्यापी महेश्वरः।
यो गुरु सर्व देवानां यकाराय नमो नमः।।६।।
षडक्षरमिदं स्तोत्रं यः पठेच्छिव सन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेनसह मोदते।।७।।

इति श्री रुद्रयामले उमामहेश्वर संवादे शिवषडक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्।

# द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।
उज्जयिन्यां महाकालमोङ्कारममलेश्वरम्॥१॥
परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशङ्करम्।
सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारुकावने॥२॥
वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंब्यकं गौतमीतटे।
हिमालये तु केदारं धूसृणेशं शिवालये॥३॥
एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायं प्रातः पठेन्नरः।
सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति॥४॥

॥इति द्वादशज्योतिर्लिङ्गानि॥

# ॥द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्तोत्रम्॥

द्वादश ज्योर्तिर्लिङ्ग स्तोत्र का पाठ करने से मनुष्य भगवान भक्ति मुक्ति देने वाले पाप राशि का नाश करने वाले भयमुक्त करने वाले होते हैं।

सौराष्ट्रेदेशे विदेशेऽतिरम्ये ज्योतिर्मयं चन्द्रकलावतंसम्।
भक्ति प्रदानाय कृपावतीर्णं तं सोमनाथं शरणं प्रपद्ये॥१॥
श्री शैलसङ्गे विवुधातिसंगे तुलाद्रितुङ्गेऽपिमुदावसंतम्।
तमर्जुनं मल्लिकपूर्वमेकं नमामि संसार समुद्रसेतुम्॥२॥
अवंतिकायां विहितावतारं मुक्ति प्रदानाय च सज्जनानाम्।
अकालमृत्योः परिरक्षणार्थं वन्देमहाकाल महासुरेशम्॥३॥

कावेरिकानर्मदयोः पवित्रे समागमे सज्जनतारणाय।
सदैव माधातृपुरे वसंतमोकारमीशं शिवमेकमीडे।।४।।
पूर्वोत्तरे प्रज्वलिकानिधाने सदा वसंतं गिरिजासमेतम्।
सुराऽसुराराधित पादपद्म श्री वैद्यनाथंतमहं नमामि।।५।।
याम्ये सदंगे नगरेऽधिरम्ये विभूषितांगं विविधेश्चभोगैः।
सद्भक्तिमुक्तिप्रदमीशमेकं श्री नागनाथं शरणं प्रपद्ये।।६।।
महाद्रिपार्श्वे च तटे रमंतं सम्पूज्यमानं सततां मुनिद्रैः।
सुराऽसुरैर्यक्षमहोरगाद्यै केदारमीशं शिवमेकमीडे।।७।।
सह्याद्रि शीर्षे विमलेवसंतं गोदावरीतीर पवित्रदेशे।
यद्दर्शनात्पातकमाशु नाशं प्रयाति तं त्र्यम्बकमीशमीडे।।८।।
सुताम्रपर्णीजलराशि योगे निबध्य सेतुं विशिखैरसंख्यैः।
श्री रामचन्द्रेण समर्पितं तं रामेश्वराख्यं नियतं नमामि।।९।।
यं डाकिनीशाकिनीका समाजे निषेव्यमानं पिशिताशनैश्च।
सदैवभीमादिपदप्रसिद्धं तं शंकरं भक्त हितंनमामि।।१०।।
सानन्द मानन्दवने वसन्तं मानन्दकन्दं हतपापवृन्दम्।
वाराणसीनाथमनाथनाधं श्री विश्वनाथं शरणं प्रपद्ये।।११।।
इलापुरे रम्य विशालकेऽस्मिन्समुल्लसन्तं च जगद्वरेण्यम्।
वन्दे महोदार तर स्वभावं घृष्णेश्वराख्यं शरणं प्रपद्ये।।१२।।
ज्योतिर्मय द्वादश लिंगकानां शिवात्मनां प्रोक्त मिदं क्रमेश।
स्तोत्रं पठित्वा मनुजोऽतिभक्त्या फलं तदालोक्य निजं भजेच्च।।१३।।

।।इति श्री द्वादश ज्योतिर्लिङ्ग स्तोत्रम्।।

# ॥ लिंगाष्टकम् ॥

लिंगाष्टक पाठ करने से आजन्म दुःख का नाश संचित पाप का नाश दरिद्र नाश लक्ष्मी प्राप्ति होती है। इस अष्टक का भक्तिपूर्वक पाठ शिव के समीप करने से अन्त में साधक को शिवलोक प्राप्त होता है।

**ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंग निर्मल भाषितशोभितलिंगम्।**
**जन्मजदुःखविनाशकलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्॥१॥**
**देवमुनिप्रवरार्चितलिंगं कामदहं करुणाकरलिङ्गम्।**
**रावणदर्पविनाशन लिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्॥२॥**
**सर्वसुगन्धिसुलेपितलिंगं बुद्धिविवर्धनकारणलिंगम्।**
**सिद्धसुरासुरवंदितलिंगं तत्प्रणमामिसदाशिवलिंगम्॥३॥**
**कनकमहामणि भूषितलिंग फणिपतिवेष्टितशोभितलिंगम्।**
**दक्षसुयज्ञविनाशनलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्॥४॥**
**कुंकुमचन्दनलेपितलिंगं पङ्कजहारसुशोभितलिंगम्।**
**सञ्चितपापविनाशनलिंग तत्प्रणमामिसदाशिवलिंगम्॥५॥**
**देवगणार्चितसेवितलिंग भावैर्भक्ति भिरेवचलिंगम्।**
**दिनकर कोटि प्रभाकर लिंगं तत्प्रणमामिसदाशिवलिंगम्॥६॥**
**अष्टदलोपरि वेष्टितलिंगं सर्वसमुद्भवकारण लिंगम्।**
**अष्टदरिद्रविनाशितलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्॥७॥**
**सुरगुरुसुरवरपूजितलिंगं सुवरनपुष्पसदार्चित लिंगम्।**
**परात्परं परमात्मकलिंगं तत्प्रणमामि सदाशिवलिंगम्॥८॥**
**लिंगाष्टकंमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।**
**शिवलोकमवाप्नोति शिवेनसह मोदते॥**

॥इति श्री लिंगाष्टकस्तोत्रं सम्पूर्णम्॥

# ॥कालभैरवाष्टकम्॥

कर्मपाश से मुक्ति, अकाल मृत्यु का नाश, दृष्टिदोष का नाश, पाप का नाश करने के लिए अष्ट सिद्धि प्राप्ति के लिये, कीर्ति प्राप्ति हेतु, पुण्य की वृद्धि तथा शोक, मोह, लोभ, क्रोध, ताप के नाश के लिए काल भैरव अष्टक का पाठक करे, निश्चित सिद्धि प्राप्त होगी।

देवराज सेव्यमानपावनांध्रि पङ्कजं
व्यालयज्ञसूत्रमिन्दुशेखरं कृपाकरम्।
नारदादियोगिवृन्दवन्दितं दिगम्बरं
काशिकापुराधिनाथ काल भैरवंभजे॥१॥

भानुकोटिभास्वरं भवाब्धितारकं परं
नीलकण्ठमीप्सितार्थदायकं त्रिलोचनम्।
करालकालमम्बुजाक्षमक्षशूलमक्षरं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥२॥

शूलटङ्कपाशदण्डपाणिमादिकारणं
श्यामकायमादिदेवमक्षरं निरामयम् ।
भीम विक्रमं प्रभुं विचित्र ताण्डवप्रियं
काशिका पुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥३॥

भुक्तिमुक्तिदायकं प्रशस्तचारुविग्रहं
भक्तवत्सलं स्थितं समस्तलोकविग्रहम्।
विनिक्वणन्मनोज्ञहेम किंकिणी लसत्कटिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवं भजे॥४॥

धर्मसेतुपालकंत्वधर्ममार्गनाशकं
कर्मपाश मोचकं सुशर्मदायकं विभुम्।
स्वर्णवर्णशेषपाशशोभिताङ्ग मण्डलं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवंभजे॥५॥

रत्नपादुकाप्रभाभिरामपादयुग्मकं
नित्यमद्वितीयमिष्ट दैवतं निरञ्जनम्।
मृत्युदर्पनाशनं कराल दंष्ट्रमोक्षणं
काशिकापुराधिनाथकालभैरवंभजे॥६॥

अट्टहासभिन्नपद्मजाण्डकोश सन्ततिं
दृष्टिपातनष्टपापजालमुग्रशासनम् ।
अष्टसिद्धिदायकं कपालमालिकंधरं
काशिकापुराधि नाथकालभैरवंभजे॥७॥

भूतसंघनायकं विशालकीर्तिदायकं
काशिवासलोकपुण्य पापशोधकं विभुम्।
नीतिमार्ग कोविदं पुरातनं जगत्पतिं
काशिकापुराधिनाथ कालभैरवंभजे॥८॥

कालभैरवाष्टकं पठन्तिये मनोहरं
ज्ञान मुक्ति साधनं विचित्रपुण्यवर्धनम्।
शोकमोह- दैन्यलोभकोपतापनाशनं
ते प्रयांति कालभैरवांघ्रिसंनिधि नराध्रुवम् ॥९॥

॥ इति श्री मच्छकराचार्य विरचितं काल भैरवाष्टकं सम्पूर्णम् ॥

# अथ शिवमहिम्न स्तोत्रम्

## पुष्पदन्त उवाच-

महिम्नः पारं ते परमविदुषो यद्यसदृशी स्तुतिर्ब्रह्मादीनामपि तदवसन्नास्त्वयि गिरः।
अथावाच्यः सर्वः स्वमतिपरिणामावधि गृणन्। ममाप्येष स्तोत्रे हर निरपवादः परिकरः।१।
अतीतः पन्थानं तव च महिमा वाङ्मनसयो रतद्व्यावृत्त्या यं चकितमभिधत्ते श्रुतिरपि।
स कस्य स्तोतव्यः कतिविधगुणः कस्य विषयः पदे त्वर्वाचीने पतति न मनः कस्य न वचः।२।
मधुस्फीता वाचः परमममृतं निर्मितवतस्तव ब्रह्मन् किं वागपि सुरगुरोर्विस्मयपदम्।
मम त्वेतां वाणीं गुणकथनपुण्येन भवतः। पुनामीत्यर्थेऽस्मिन् पुरमथन बुद्धिर्व्यवसिता।३।
तवैश्वर्यं यत्तज्जगदुदयरक्षाप्रलयकृत् त्रयीवस्तुव्यस्तं तिसृषु गुणभिन्नासु तनुषु।
अभव्यानामस्मिन् वरद् रमणीयामरमणीं विहन्तुं व्याक्रोशीं विदधत इहैके जडधियः।४।
किमीहः किं कायः स खलु किमुपायस्त्रिभुवनं किमाधारो धाता सृजति किमुपादान इति च।
अतर्क्यैश्वर्ये त्वय्यनवसरदुःस्थो हतधियः कुतर्कोऽयं कांश्चिन्मुखरयति मोहाय जगतः।५।
अजन्मानो लोकाः, किमवयववन्तोऽपि जगता। मधिष्ठातारं किं भवविधिरनादृत्य भवति।
अनीशो वा कुर्याद् भुवनजनने कः परिकरो। यतो मन्दास्त्वां प्रत्यमरवर संशेरत इमे।६।
त्रयी सांख्यं योगः पशुपतिमतं वैष्णवमिति प्रभिन्ने प्रस्थाने परमिदमदः पथ्यमिति च।
रुचीनां वैचित्र्यादृजुकुटिलनानापथजुषां नृणामेको गम्यस्त्वमसि पयसामर्णव इव।७।
महोक्षः खट्वांगं परशुरजिनं भस्म फणिनः कपालं चेतीयत्तव वरद तन्त्रोपकरणम्।
सुरास्तां तामृद्धिं दधति च भवद्भ्रूप्रणिहितां नहि स्वात्मारामं विषयमृगतृष्णा भ्रमयति।८।
ध्रुवं कश्चित्सर्वं सकलमपरस्त्वध्रुवमिदं परो ध्रौव्याऽध्रौव्ये जगति गदति व्यस्तविषये।
समस्तेऽप्येतस्मिन् पुरमथन तैर्विस्मित इव स्तुवज्जिह्लेमि त्वां न खलु ननु धृष्टा मुखरता।९।
तवैश्वर्यं यत्नाद् यदुपरि विरिञ्चो हरिरधः परिच्छेत्तुं यातावनलमनलस्कन्धवपुषः।
ततो भक्तिश्रद्धा भरगुरुगृणद्भ्यां गिरिश यत् स्वयं तस्थे ताभ्यां तव किमनुवृत्तिर्न फलति।१०।
अयत्नादापाद्य त्रिभुवनमवैरव्यतिकरं दशास्यो यद् बाहूनभृत रणकण्डूपरवशान्।

शिर:पद्मश्रेणी रचितचरणाम्भोरुहबले: स्थिरायास्त्वद्भक्तेस्त्रिपुरहर विस्फूर्जितमिदम्॥११।
अमुष्य त्वत्सेवासमधिगतसारं भुजवनं बलात् कैलासेऽपि त्वदधिवसतौ विक्रमयत:
अलभ्या पातालेऽप्यलसचलितांगुष्ठशिरसि प्रतिष्ठा त्वय्यासीद् ध्रुवमुपचितो मुह्यति खल:।१२।
यदृद्धि सुत्राम्णो वरद परमोच्चैरपि सती मधश्चक्रे बाण: परिजनविधेयस्त्रिभुवन:।
न तच्चित्रं तस्मिन् वरिवसितरि त्वच्चरणयोर्न्क-स्याप्युन्नत्यै भवति शिरसस्त्वय्यवनति:॥१३॥
अकाण्डब्रह्माण्डक्षयचकित देवासुरकृपा विधेयस्यासीद्य- स्त्रिनयन विषं संहृतवत:।
स कल्माष: कण्ठे तव न कुरुते न श्रियमहो विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभयभंगव्यसनिन:।१४।
असिद्धार्था नैव क्वचिदपि सदेवासुरनरे निवर्तन्ते नित्यं जगति जयिनो यस्य विशिखा:।
स पश्यन्नीश त्वामितरसुरसाधारणमभूत् स्मर: स्मर्तव्यात्मा नहि वशिषु पथ्य: परिभव:।१५।
मही पादाघाताद् व्रजति सहसा संशयपदं पदं विष्णोर्भ्राम्यदभुजपरिध रुग्ण ग्रहणम्।
मुहुर्द्यौदौस्थ्यं यात्यनिभृतजटाताडिततटा जगद्रक्षायै त्वं नटसि ननु वामैव विभुता।१६।
वि यद्व्यापी तारागणगुणितफेनोद्ग मरुचि: प्रवाहो वारां य: पृषतलघुदृष्ट: शिरसि ते।
जगद्-द्वीपाकारं जलधिवलयं तेन कृतमित्यनेनैवोन्नेयं धृतमहिम दिव्यं तव वपु:।१७।
रथ: क्षोणी यन्ता शतधृतिरगेन्द्रो धनुरथो रथांगे चन्द्रार्कौ रथचरणपाणि: शर इति।
दिधक्षोस्ते कोऽयं त्रिपुरतृणमाडम्बरविधिर्विधेयै: क्रीड़न्त्यो न खलु परतन्त्रा: प्रभुधिय:।१८।
हरिस्ते साहस्त्रं कमलबलिमाधाय पदयोर्यदेकोने तस्मिन् निजमुदहरन्नेत्रकमलम् ।
गतो भक्त्युद्रेक: परिणतिमसौ चक्रवपुषा त्रयाणां रक्षायै त्रिपुरहर जागर्ति जगताम्।१९।
क्रतौ सुप्ते जाग्रत्वमसि फलयोगे कृतुमतां क्व कर्म प्रध्वस्तं फलति पुरुषाराधनमृते।
अतस्त्वां सम्प्रेक्ष्य क्रतुषु फलदानप्रतिभुवं श्रुतौ श्रद्धां बद्ध्वा कृतपरिकर: कर्मसु जन:।२०।
क्रियादक्षो दक्ष: क्रतुपतिरधीशस्तनुभृतामृषीणा मार्त्विज्यं शरणद सदस्या: सुरगणा:।
क्रतुभ्रेषस्त्वत्त: क्रतुफलविधानव्यसनिनो ध्रुवं कर्तु श्रद्धाविधुरमभिचाराय हि मखा:।२१।
प्रजानाथं नाथ! प्रसभमभिकं स्वां दुहितरं गतं रोहिद्भूतां रिरमयिषुमृष्यस्य वपुषा।
धनुष्पाणेर्यातं दिवमपि सपत्राकृतममुं त्रसन्तं तेऽद्यापि त्यजति न मृगव्याधरभस:२२॥
स्वलावण्याशंसाधृतधनुषमन्हाय तृणवत् पुर: प्लुष्टं दृष्टवा पुरमथन पुष्पायुधमपि।

यदि स्त्रैणं देवी यमनिरतदेहार्धघटना दवैति त्वामद्धा बत वरद मुग्धा युवतय:।२३।
श्मशानेष्वाक्रीडा स्मरहर! पिशाचा: सहचराश्चिताभस्मालेप: स्रगपि नृकरोटीपरिकर:
अमङ्गल्यं शीलं तव भवतु नामैवमखिलं तथाऽपि स्मर्तृणां वरद परमं मंगलमसि।२४।
मन: प्रत्यक्चित्ते सविधमवधायात्तमरुत: प्रहृष्यद्रोमाण: प्रमदसलिलोत्सं गतिदृश:।
यदालोक्याह्लादं ह्रद इव निमज्ज्यामृतमये दधत्यन्तस्तत्त्वं किमपि यमिनस्तत्किल भवान्।२५।
त्वमर्कस्त्वं सोमस्त्वमसि पवनस्त्वं हुतवहस्त्वमापस्त्वं व्योम त्वमु धरणिरात्मा त्वमिति च।
परिच्छन्नामेवं त्वयि परिणता बिभ्रतु गिरं न विद्मस्तत्तत्वं वयमिह तु यत्वं न भवसि।२६।
त्रयीं तिस्त्रो वृत्तीस्त्रिभुवनमथो त्रीनपि सुरानकाराद्यै- र्वर्णैस्त्रिभिरभिदधत् तीर्णविकृति:।
तुरीयं ते धाम ध्वनिभिरवरुन्धानमणुभि: समस्तं व्यस्तं त्वां शरणद! गृणात्योमिति पदम्।२७।
भव: शर्वो रुद्र: पशुपतिरथोग्र: सहमहांस्तथा भीमेशा- नाविति यदभिधानाष्टकमिदम्।
अमुष्मिन् प्रत्येकं प्रविचरति देव श्रुतिरपि प्रियायास्मै धाम्ने प्रविहित नमस्योऽस्मि भवते।२८।
नमो नेदिष्ठाय प्रियदव दविष्ठाय च नमो। नम: क्षोदिष्ठाय स्मरहर महिष्ठाय च नम:
नमो वर्षिष्ठाय त्रिनयन यविष्ठाय च नमो नम: सर्वस्मै ते तदिदमिति शर्वाय च नम:।२९।
बहलरजसे विश्वोत्पत्तौ भवाय नमो नम: प्रबलतमसे तत्संहारे हराय नमो नम:
जनसुखकृते सत्त्वोद्रिक्तौ मृडाय नमो नम: प्रमहसि पदे निस्त्रैगुण्ये शिवाय नमो नम:।३०।
कृशपरिणति चेत: क्लेशवश्यं क्व चेदं क्व च तव गुणसीमोल्लंघिनी शश्वदृद्धि:।
इति चकितममन्दीकृत्य मां भक्तिराधाद् वरद चरणयोस्ते वाक्यपुष्पोपहारम्।३१।
असितगिरिसमं स्यात् कज्जलं [illegible]न्धुपात्रे सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वका[illegible] तदपि तव गुणानामीश पारं! न याति।३२।
असुरसुरमुनीन्द्रैरर्चितस्येन्दुमौलेर्ग्रथित-गुणमहिम्नोनिर्गुणस्येश्वरस्य।
सकलगुणवरिष्ठ: पुष्पदन्ताभिधानो रुचिरमलघुवृत्तै: स्तोत्रमेतच्चकार। ३३।
अहरहरनवद्यं धूर्जटे: स्तोत्रमेतत् पठति परमभक्त्या शुद्धचित्त: पुमान् य:।
स भवति शिवलोके रुद्रतुल्यस्तथात्र प्रचुरतरधनायु: पुत्रवान् कीर्तिमांश्च। ३४।
महेशान्नापरो देवो महिम्नो नापरा: स्तुति:। अघोरान्नापरो मन्त्रो नास्ति तत्त्वं गुरो: परम्।३५।

दीक्षा दानं तपस्तीर्थं ज्ञानं यागादिकाः क्रियाः। महिम्नस्तवपाठस्य कलां नार्हन्ति षोडशीम्। ३६।

कुसुमदशननामा सर्वगन्धर्वराजः शिशुधरवरमौलेर्देवदेवस्य दासः।
स खलु निजमहिम्नो भ्रष्ट एवास्य रोषात् स्तवनमिदमकार्षीद् दिव्यदिव्यं महिम्नः।३७।

सुरवरमुनिपूज्यं स्वर्गमोक्षैकहेतुं पठति यदि मनुष्यः प्राञ्जलिर्नान्यचेताः।
व्रजति शिवसमीपं किन्नरैः स्तूयमानः स्तवनमिदममोघं पुष्पदन्तप्रणीतम्।३८।

आसमाप्तमिदं स्तोत्रं पुण्यंगन्धर्वभाषितम् अनौपम्यं मनोहारि शिवमीश्वरवर्णनम्।३९।

इत्येषा वांगमयी पूजा श्रीमच्छंकरपादयोः। अर्पिता तेन देवेशः प्रीयतां च सदाशिवः।४०।

तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोऽसि महेश्वर। यादृशोऽसि महादेव तादृशाय नमो नमः।४१।

एककालं द्विकालं वा त्रिकालं यः पठेन्नरः। सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।४२।

श्रीपुष्पदन्तमुखपंकजनिर्गतेन स्तोत्रेण किल्विषहरेण हरप्रियेण।
कण्ठस्थितेन पठितेन समाहितेन, सुप्रीणितो भवति भूतपतिर्महेशः।४३।

।। इति श्री शिव महिम्नः स्तोत्रं सम्पूर्णम्।।

---

# ॥ शिव ताण्डव स्तोत्रम् ॥

## रावणकृत

शान्तं पद्मासनस्थं शश-धर-मुकुटं पञ्च-वक्त्रं त्रिनेत्रं
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षिणाङ्गे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टां डमरुक-सहितं चांकुशं वामभागे
नानालङ्कारदीप्त स्फटिकमणिनिभं पार्वतीशं नमामि॥

भगवान शिव की पूजा के समय इस रावण कृत शिव ताण्डव स्तोत्र का पाठ करने से लक्ष्मी की प्राप्ति तथा भगवान शंकर भयरहित कर साधक को आयु प्रदान करते है। इसलिये साधक शिव ताण्डव स्तोत्र का पाठ करे जिससे जीवन भयमुक्त होकर जीवन यापन कर सके।

जटाटवी-गलज्जल-प्रवाह-पावित-स्थले।
गलेऽवलम्ब्य लम्बितां भुजङ्ग-तुङ्ग-मालिकाम्।
डमड्-डमड्-डमड्-डमन्निनादवड्डमर्वयं।
चकार चण्ड-ताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम्।१।

जटा-कटाहसम्भ्रम-भ्रमन्निलिम्प-निर्झरी-
विलोल-वीचि-वल्लरी-विराजमान-मर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्ज्वलललाटपट्ट - पावके।
किशोर-चन्द्र-शेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम।२।

धरा-धरेन्द्र-नन्दिनी-विलास-बन्धु-बन्धुर-

स्फुरद् दिगन्त-सन्तति-प्रमोद-मान-मानसे।
कृपा-कटाक्ष-घोरणी-निरुद्ध-दुर्धरापदि ।
क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि।३।
जटाभुजङ्ग-पिङ्गल-स्फुरत्फणा-मणि-प्रभा
कदम्ब-कुँकम-द्रव-प्रलिप्त-दिग्वधू-मुखे ।
मदान्ध-सिन्धुर-स्फुरत्वगुत्तरीयमेदुरे ।
मनोविनोदमद्भुतं विभर्तुभूत-भर्तरि।४।
सहस्त्र-लोचन-प्रभृत्यशेष- लेख- शेखर
प्रसून-धूलि-धोरणी-विधूसरांघ्रि-पीठ-भूः।
भुजङ्ग-राज-मालया निबद्ध-जाट-जूटकः
श्रियै चिराय जायतां चकोर-बन्धु-शेखरः।५।
ललाट-चत्वरे ज्वलद्धनञ्जयस्फुलिङ्गभा
निपीत-पञ्च-सायकं नमन्निलिम्प-नायकम्।
सुधा-मयूख-लेखया विराजमानशेखरं
महा-कपालि-सम्पदे शिरो-जटालमस्तु नः। ६।
कराल-फाल-पट्टिका-धगद्धगद्धगज्जवल-
द्धनञ्जयाहुतीकृत-प्रचण्ड-पञ्चसायके ।
धराधरेन्द्र-नन्दिनी-कुचाग्र-चित्र-पत्रक-
प्रकल्पनैक-शिल्पिनि त्रिलोचने रतिर्मम।७।
नवीन-मेघ-मण्डली-निरुद्ध-दुर्धर-स्फुर-
त्कुहू-निशीथिनी-तमः प्रबन्ध-बन्धु-कन्धरः ।

निलिम्प-निर्झरी-धरस्तनोतु कृत्ति-सिन्धुरः।
कला-निधान-बन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः।८।
प्रफुल्ल-नील-पङ्कज-प्रपञ्च-कालिम-प्रभा-
वलम्बि-कण्ठ-कन्दली-रुचि-प्रबद्ध-कन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं
गजच्छिदान्धकच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।९।
अखर्व-सर्व-मङ्गला-कला-कदम्ब-मञ्जरी
रस-प्रवाह-माधुरी-विजृम्भणो-मधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं
गजान्तकान्धकान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।१०।
जयत्वदभ्र-विभ्रम-भ्रमद्-भुजङ्गम-श्वस-
द्विनिर्गम-क्रम-स्फुरत्कराल-फाल-हव्यवाड्।
धिमिद्धिमिद्धिमद्-ध्वनन्मृदंग-तुंग-मंगल-
ध्वनि-क्रम-प्रवर्त्तितः प्रचण्ड-ताण्डवः शिवः।११।
दृषद्विचित्र-तल्पयोर्भुजंग-मौक्तिकस्त्रजो
र्गरिष्ठ-रत्न-लोष्ठयोसुहृद्विपक्ष-पक्षयोः।
तृणारविन्द-चक्षुषोः प्रजा-महीमहेन्द्रयोः
सम-प्रवृत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्।१२।
कदा निलिम्प-निर्झरी-निकुंज-कोटरे वसन्
विमुक्त-दुर्मतिः सदा शिरःस्थ-मंजलिं वहन्।

विलोल-लोल-लोचनो ललाम-फाल-लग्नकः
शिवेति मंत्रमुच्चरन् सदा सुखी भवाम्यहम्। १३।
इमं हि नित्यमेवमुक्तमुत्तमोत्तम स्तवं
पठन्स्मरन्ब्रुन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सु भक्तिमाशु याति नान्यथा गति
विमोचनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम्।१४।
पूजावसान-समये दशवक्त्र-गीतं,
यःशम्भूपूजनपरं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथ-गजेन्द्र-तुरंग-युक्तां
लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः।१५॥
॥ इति रावणकृत श्रीशिव ताण्डव स्तोत्रम् समाप्तम् ॥

---

# ॥ वेदसार शिवस्तवः ॥

श्री गणेशाय नमः॥

पशूनां पतिं पापनाशं परेशं
गजेन्द्रस्य कृत्तिं वसानं वरेण्यम्।
जटाजूटमध्ये स्फुरद्गांगवारि
महादेवमेकं स्मरामि स्मरामिम्॥१॥

महेशं सुरेशं सुरारातिनाशं विभुं विश्वनाथं विभूत्यंगभूषम्। विरूपाक्षमिंद्वर्कवह्नित्रिनेत्रं सदानन्दमीडे प्रभुं पञ्चवक्त्रम्॥२॥ गिरीशं गणेशं गले नील-वर्णं गजेन्द्राधिरूढं गणातीतरूपम्। भवं भास्वरं भस्मना भूषितांगं भवानीकलत्रं भजे पञ्चवक्त्रम्॥३॥ शिवाकांतशंभो शशांकार्धमौले महेशान शूलिन् जटाजूटधारिन्। त्वमेको जगद्व्यापको विश्वरूप प्रसीद प्रसीद प्रभो पूर्णरूप॥४॥ परात्मानमेकं जगद्बीजमाद्यं निरीहं निराकारमोंकारवेद्यम्। यतो जायते पाल्यते येन विश्वं तमीशं भजे लीयते यत्र विश्वम्॥५॥ न भूमिर्न चापो न वह्निर्न वार्युन चाकाशमास्ते न तंद्रां न निद्रा। न ग्रीष्मो न शीतं न देशो न वेषो न यस्यास्ति मूर्तिस्त्रिमूर्तिं तमीडे॥६॥ अजं शाश्वतं कारणं कारणानां शिवं केवलं भासकं भासकानाम्। तुरीयं तमःपारमाद्यंतहीनं प्रपद्ये परं पावनं द्वैतहीनम्॥७॥ नमस्ते नमस्ते विभो विश्वमूर्ते नमस्ते नमस्ते चिदानंदमूर्ते नमस्ते नमस्ते तपोयोगगम्य नमस्ते

नमस्ते श्रुतिज्ञानगम्य॥८॥ प्रभो शूलपाणे विभो विश्वनाथ महादेव शंभो महेश त्रिनेत्र। शिवाकांत शांत स्मरारे पुरारे त्वदन्यो वरेण्यो न मान्यो न गण्यः॥९॥ शम्भो महेश करुणामय शूलपाणे गौरीपते पशुपते पशुपाशनाशिन्। काशीपते करुणया जगदेतदेकस्त्वं हंसि पासि विदधासि महेश्वरोऽसि॥१०॥ त्वतो जगद्भवति देव भव स्मरारे त्वय्येव तिष्ठति जगन्मृड विश्वनाथ। त्वय्येव गच्छति लयं जगदेतदीश लिंगात्मकं हर चराचरविश्वरूपिन्॥११॥

इति श्रीमच्छंकराचार्यविरचितं वेदसार शिवस्तोत्र सम्पूर्णम्।

## ॥ विश्वनाथाष्टकम् ॥

गणेशाय नमः॥ गंगातरंगरमणीयजटाकलापं गौरीनिरंतरविभूषितवामभागम्। नारायणप्रिय-मनंगमदापहारं वाराणसीपुरपतिं भज विश्वनाथम्॥१॥ वाचामगोचरमनेकगुणस्वरूपं वागीशविष्णुसुर-सेवितपादपीठम्। वामेन विग्रहवरेण कलत्रवंतं वाराणसी०॥२॥ भूताधिपं भुजगभूषणभूषितांगं व्याघ्राजिनांवरधरं जटिलं त्रिनेत्रम्। पाशांकुशाभयवर-प्रदशूलपाणि वाराणसी०॥३॥ शीतांशुशोभितकिरीटविराजमानं भालेक्षणानलविशोषित पञ्चवाणम्। नागाधिपारचितभासुरकर्णपूरं

वाराणसी०।।४।। पञ्चाननं दूरितमत्तलंगजानां नागांतकं दनुजपुङ्गवपन्नगानाम्। दावानलं मरणशोकजराटवीनां वाराणसी०।।५।। तेजोमयं सगुणनिर्गुणमद्वितीयमा-नन्दकन्दमपराजितमप्रमेयम्। नागात्मकं सकलनिष्कल-मात्मरूपं वाराणसी०।।६।। आशां विहाय परिहृत्य परस्य निन्दां पापे रतिं च सुनिवार्य मनः समाधौ। आदाय हृत्कमलमध्यगतं परेशं वाराणसी०।।७।। रागादिदोषरहितं स्वजनानुरागंवैराग्यशान्तिनिलयं गिरिजासहायम्। माधुर्यधैर्यसुभगं गरलाभिरामं वाराणसी०।।८।। वाराणसीपुरपतेः स्तवनं शिवस्य व्याख्यातमष्टकमिदं पठते मनुष्यः। विद्या श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्ति संप्राप्य देहविलये लभते च मोक्षम्।।९।। विश्वनाथष्टकमिदं यः पठेच्छिवसन्निधौ। शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।१०।।

इति श्रीव्यासकृतं विश्वनाथाष्टकं सम्पूर्णम्।।

# शिवापराध-क्षमापन-स्तोत्रम्

आदौ कर्मप्रसंगात कलियति कलुषं मातृकुक्षौ स्थितं मां
विष्मूत्रामेध्यमध्ये क्वथयति नितरां जाठरो जातवेदाः।
यद्यद् वै तत्र दुःखं व्यवथति नितरां शक्यते केन वक्तुं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्री महादेव शम्भो॥१॥

बाल्ये दुःखातिरेकान् मल-लुलित-वपुः स्तन्यपाने पिपासा
नो शक्तश्चेन्द्रिभ्यो भवगुणजनिता जन्तवो मां तुदन्ति।
नानारोगदिदुःखाद्रुदन-परवशः शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्री महादेव शम्भो॥२॥

प्रौढोऽहं यौवनस्थो विषयविषधरैः पञ्चभिर्मर्मसन्धौ
दष्टो नष्टो विवेकः सुत-धन-युवति-स्वादसौख्ये निषण्नः।
शैवीचिन्ताविहीनं मम हृदयमहो मानगर्वाधिरूढं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भो श्री महोदवशम्भो॥३॥

वार्धक्ये चेन्द्रियाणा विगतगतिमतिश्चाऽऽधिदैवादि-तापै
पापै रोगैर्वियोगैस्तत्वनवसितवपुः प्रौढिहीनं च दीनम्।
मिथ्योमोहाभिलाषैर्भ्रमति मम मनो धूर्जटेध्यानशून्यं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्री महोदवशम्भो॥४॥

नो शक्यं स्मार्तकर्म प्रतिपद-गहन-प्रत्यवायाकुलाख्यं
श्रोते वार्ता कथं मे द्विजकुलविहिते ब्रह्ममार्गे सुरारे।
नास्था धर्मे विचारः श्रवणमननयोः किं निदिध्यासितव्यं

क्षन्तव्यो मेऽपराध शिव शिव शिव भोः श्री महोदवशम्भो॥५॥

स्नात्वा प्रत्यूषकाले स्नपनविधिविधौ नाहृतं गांगतोयं
पूजार्थं वा कदाचिद् बहुतरगहनात् खण्डबिल्वीदलानि।
नाऽऽनीता पद्ममाला सरसि विकसिता गन्ध-पुष्पैस्त्वदर्थं
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्री महोदवशम्भो॥६॥

दुग्धैर्मध्वाज्य-युक्तैर्दधिसित-सहितैः स्नापितं नैव लिंगं
नो लिप्तं चन्दनाद्यैः कनक-विरचितैः पूजितं न प्रसूनैः।
धूपैः कर्पूर- दीपैर्विविध- रसयुतैर्नैव भक्ष्योपहारैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्री महोदवशम्भो॥७॥

ध्यात्वा चित्ते शिवाख्यं प्रचूरतरधनं नैव दत्तं द्विजेभ्यो
द्रव्यं ते लक्षसंख्यैर्हुतवहवदने नाऽर्पितं बीजमन्त्रैः।
नो तप्तं गांगीतीरे व्रत-जप-नियमैःरुद्रजाप्यैन वेदैः
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्री महोदवशम्भो॥८॥

स्थित्वा स्थाने सरोजे प्रणवमयमरुत कुण्डले सूक्ष्ममार्गे
शान्ते स्वान्ते प्रलीने प्रकटित-विभवे ज्योतिरूपे पराख्ये।
लिंगज्ञे बह्मवाक्ये सकलतनुगतं शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्री महोदवशम्भो॥९॥

नग्नो निःसंगशुद्धस्त्रिगुणविरहितो ध्वस्तमोहान्धकारो
नासाग्रे न्यस्तदृष्टिर्विदितभवगुणो नैव दृष्टः कदाचित्।
उन्मन्याऽवस्थया त्वां विगतकलिमलं शंकरं न स्मरामि
क्षन्तव्यो मेऽपराधः शिव शिव शिव भोः श्री महोदवशम्भो॥१०॥

चन्द्रोद्भासितशेखरे स्मरहरे गंगाधरे शंकरे
सर्पैर्भूषित- कण्ठकर्णविवरे नेत्रोत्थवैश्वानरे।
दन्तित्वक्कृत- सुन्दराम्बरधरे त्रैलोक्यसारे हरे
मोक्षार्थं कुरु चित्तवृत्तिमखिलामन्यैस्तु किं कर्मभिः।।११।।
किं वाऽनेन धनेन वाजि-करिभिः प्राप्तेन राज्येन किं
किं वा पुत्रकलत्रमित्रपशुभिर्देहेन गेहेन किम्।
ज्ञात्वैतत् क्षणभंगुरं सपदि रे त्याज्यं मनो दूरतः
स्वात्मार्थं गुरुवाक्ययो भज भज श्री पार्वतीवल्लभ।।१२।।
आयुर्नश्यति पश्यतां प्रतिदिन याति क्षयं यौवनं
प्रत्यायान्ति गताः पुनर्न दिवसाःकालो जगद्भक्षकः।
लक्ष्मीस्योयतरंगभंग-चपला विद्युच्चलं जीवितं
तस्मान् मां शरणागतं शदणद त्वं रक्ष रक्षाधुना।।१३।।

करचरणकृत वाक्-कायजं कर्मजं वा
श्रवणनयनजं वा मानसं वाऽपराधम्।
विहितमविहितं वा सर्वमतेत् क्षमस्व
जय जय करुणाब्धे श्री महादेव शम्भो।।१४।।

---

# श्री शिव चालीसा

## ।।दोहा।।

जय गणेश गिरिजा सुवन, मंगल मूल सुजान।
कहत अयोध्यादास तुम, देहु अभय वरदान।।

जय गिरजापति दीनदयाला, सदा करत सन्तन प्रतिपाला।
भाल चन्द्रमा सोहत नीके, कानन कुण्डल नागफनी के।
अंग गौर शिर गंग बहाये, मुण्डमाल तन छार लगाये।
वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे, छवि को देख नाग मुनि मोहे।
मैना मातु कि हवे दुलारी, वाम अंग सोहत छवि न्यारी
कर त्रिशूल सोहत छवि भारी, करत सदा शत्रुन क्षयकारी।
नन्दि गणेश सोहैं, तहँ कैसे, सागर मध्य कमल हैं जैसे।
कार्तिक श्याम और गणराऊ, या छवि को कहि जात न काऊ।
देवन जबहीं जाय पुकारा, तबहीं दुःख प्रभु आप निवारा।
किया उपद्रव तारक भारी, देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी।
तुरत षडानन आप पठायउ, लव निमेष महँ मारि गिरायऊ।
आप जलंधर असुर संहारा, सुयश तुम्हार विदित संसारा।
त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई, सबहिं कृपा कर लीन बचाई।
किया तपहिं भागीरथ भारी, पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी।
दानि महँ तुम सम कोई नाहिं, सेवक अस्तुति करत सदाहीं।
वेद नाम महिमा तव गाई, अकथ अनादि भेद नहिं पाई।
प्रगटी उदधि मंथन में ज्वाला, जरे सुरासुर भये विहाला।
कीन्हीं दया तहँ करी सहाई, नीलकण्ठ तब नाम कहाई।
पूजन रामचन्द्र जब कीन्हा, जीत के लंक विभीषण दीन्हा।
सहस कमल में हो रही धारी, कीन्ह परीक्षा तबहिं पुरारी।

एक कमल प्रभु राखे जोई, कमल नयन पूजन चहँ सोई।
कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर, भए प्रसन्न दिए इच्छित वर।
जै जै जै अनन्त अविनासी, करत कृपा सबकी घटवासी।
दुष्ट सकल नित मोहि सतावै, भ्रमत रहौं मोहि चैन न आवै।
त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो, यहि अवसर मोहि आन उबारो।
लै त्रिशूल शत्रुन को मारो, संकट से मोहि आन उबारो।
मातु पिता भ्राता सब कोई, संकट में पूछत नहीं कोई।
स्वामी एक है आस तुम्हारी, आय हरहु मम संकट भारी।
धन निर्धन को देत सदाहीं, जो कोई जाँचे वो फल पाहीं।
अस्तुति केहि विधि करों तिहारी, क्षमहु नाथ अब चूक हमारी।
शंकर हो संकट के नाशन, मंगल कारण विघ्न विनाशन।
योगि यति मुनि ध्यान लगावैं, नारद शारद शीश नवावैं।
नमो नमो जय नमो शिवाये, सुर ब्रह्मादिक पार न पाए।
जो यह पाठ करे मन लाई, तापर होत हैं शम्भु सहाई।
ऋनिया जो कोई हो अधिकारी, पाठ करे सो पावन हारी।
पुत्रहीन इच्छा कर कोई, निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई।
पंडित त्रयोदशी को लावे, ध्यान पूर्वक होम करावे।
त्रयोदशी व्रत करे हमेशा, तन नहिं ताके रहे कलेशा।
धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे, शंकर सम्मुख पाठ सुनावे।
जन्म जन्म के पाप नसावे, अन्त वास शिवपुर में पावे।
कहे अयोध्या आस तुम्हारी, जानि सकल दुःख हरहु हमारी।

दोहा- नित्त नेम कर प्रातः ही पाठ करौं चालीस।
तुम मेरी मनोकामना, पूर्ण करो जगदीश।
मगसर छठि हेमन्त ऋतु, संवत् चौंसठ जान।
अस्तुति चालीसा शिवहि, पूर्ण कीन कल्याण।।

Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh